सत्यनाम

सुरति+योग

(आध्यात्मिक त्रैमासिक पत्रिका)

सत्यनाम, सत्यसुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त, पुरुष, मुनिन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतायन, धनी धर्मदास, वचन वंश चुरामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बालापीर, केवल नाम, अमोल नाम, सुर्त सनेही नाम, हक्क नाम, पाक नाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, उग्रनाम, दयानाम, पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहब, पंथ श्री प्रकाशमुनि नाम साहब की दया, चार गुरु वंश ब्यालिश की दया, सर्व संतों की दया-

वर्ष-19, अंक-4, कबीर संवत् 615 (वि. सं. 2070) जन., फर., मार्च 2014

शबद

ऋतु फागुन नियरानी, कोई पिया को मिलाओ।।
सोई सुन्दरी जाके पिया को बरत है, सो पिय के मनभानी।
खेलत फाग अंग नहीं मोरे, सतगुरु सों मन ठानी।।
पिय का रूप कहँ लग बरनों, पिय के रूप लुभानी।
सुर नर मुनि जाको ध्यान धरत है, सो संतन मिल जानी।।
एकहि खेल गई गृह अपने, एकहि कुल उरझानी।
एकहिं नाम बिना डहकावै, हो रही ऐंचातानी।।
तुम जिन जानो येही फाग है, ये कछु अकथ कहानी।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, बुझे बिरला ज्ञानी।।

प्रधान संपादक :
श्रीमती सरोजिनी गबेल
एम.ए. हिन्दी साहित्य, दर्शन शास्त्र, एम.फिल दर्शन

संपादक :
महंत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

सह सम्पादक :
महंत पुरुषोत्तम दास
श्रीमती नलिनी गबेल

प्रबंधक :
प्रशांत शर्मा
अचिन्त दास

प्रकाशक :
श्री सदगुरु कबीर धर्मदास साहब
वंशावली प्रतिनिधि सभा
दामाखेड़ा, जिला-रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक :
छत्तीसगढ़ ऑफसेट
रायपुर (छ.ग.)

कम्प्यूटर टाइप सेटिंग :
प्रकाश कुँज
कटोरा तालाब, रायपुर (छ.ग.)

एक प्रति
मूल्य 19.00 रु. मात्र

अनुक्रमणिका

आलेख **पृष्ठ**

लेख

- हरि बिन और न देखा.....पंथश्री प्रकाशमुनि नाम साहब....03
- कबीर साहब के अनमोल दोहे.....महंत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद.....18
- जो मन निर्मल होय .....श्रीमती सोनिया गोस्वामी 20

स्वास्थ्य जगत

- आँतों की कृमि.....डॉ. कविता वर्मा.....32

स्तंभ

- अनुराग सागर.....महंत श्री हरिसिंह राठौर 30
- ज्ञानवर्धक पहेली.....श्री भारत सोनवानी.....34
- पंथ प्रकाश .....महंत श्री परवत दास.....36

	वार्षिक	त्रैवार्षिक
भारत, नेपाल में	80 रुपये	225 रुपये
विदेश में	10$	25$

D. K. Sahu

हरि बिन और न देखा

पंथ श्री प्रकाशमुनि नाम साहब, आचार्य कबीर पंथ

प्रवचन : माघ मेला 2004

हम लोगों के बीच बहुत ही हर्ष और उल्लास का क्षण व्यतीत हो रहा है, हम कबीर धर्मनगर शताब्दी महोत्सव का आयोजन कर रहे हैं और मिल-जुलकर इस महोत्सव का आनन्द उठा रहे हैं। बहुत बड़ी संख्या में सद्गुरु कबीर साहब के अनुयायी, उनके भक्त, उनके नेमी-प्रेमी कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा में पधारे हुए हैं। आज पूर्णिमा के अवसर पर प्राचीन सिंहासन में जहाँ परम पूज्य उग्रनाम साहेब विराजमान होकर भक्तों को दर्शन एवं सत्संग का लाभ देते थे, उनके पश्चात परम पूज्य दयानाम साहेब उस सिंहासन पर विराजमान होते थे, तत्पश्चात हमारे भक्तों को आर्शीवचन प्रदान करते रहे। उस ऐतिहासिक और पूजनीय सिंहासन के स्थान पर ही उसके मूल चबूतरे को बगैर हटाये उस पर एक स्मारक बनाया गया और एक साधारण से ग्राम दामाखेड़ा को कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा बनाने वाले परम पूज्य पंथ श्री हुजूर उग्रनाम साहेब की प्रतिमा स्थापित की गयी। कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा में कबीर पंथ का मुख्यालय होने के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में ही ऐसा किया गया है। मूर्ति की स्थापना पूजा पाठ के लिये नहीं की गई है।

सद्गुरु कबीर साहब ने मूर्ति पूजन का खंडन किया है कि नहीं, यह तो मैं नहीं कह सकता लेकिन उनके वाणी-वचन इस ओर संकेत करते हैं कि वे मूर्ति पूजन का खंडन करते हैं। उनकी इस वाणी से ऐसा ही प्रतीत होता है-

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार ।
तासे तो चक्की भली, पीस खाय संसार।।

साहब कहते हैं अगर पत्थर की मूर्ति को पूजने से परमात्मा मिले, तो मैं पूरे पहाड़ की पूजा करने के लिये तैयार हूँ, क्योंकि-

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।

वे कह रहे हैं कि मेरे लाल की लाली तो सर्वत्र व्याप्त है।

दुई दुई लोचन पेखा, हरि बिन और न देखा।
मेरे नैन रहे रंगुलाई, बेगल कछु कहा न जाई।।
हमरा भ्रम राह भउ भागा, जब रामनाम चित लागा।

साहब कह रहे हैं कि मैंने सारे संसार में खूब घूम-घूमकर अपनी इन दोनों आँखों से देखा, परन्तु परमात्मा के अलावा मुझे कोई दूसरा नजर ही नहीं आता है, जिधर देखता हूँ, वही नजर आता है।

दर दीवार दरपन भया, जित देखूँ तित तोय।
कंकर पत्थर ठीकरी, सब भयो आरसी मोय।।

तो नि:संदेह वह सत्यपुरुष घट-घट में, कण-कण में व्याप्त है। मेरे विचार से साहब हमारे तौर तरीके का खंडन करते हैं। हम उसी पत्थर की मूर्ति की पूजा करते हैं जिसे हम गढ़ते हैं। अगर पत्थर में हमारी आस्था है तो किसी और पत्थर की पूजा क्यों नहीं करते ? संसार में यत्र-तत्र-सर्वत्र पत्थर बिखरे पड़े हुए हैं, हम किसी भी पत्थर की पूजा नहीं करते। लेकिन जिस पत्थर को हम छेनी और हथौड़ी से तराशते हैं और एक स्मारक बनाकर वहाँ

D. K. Sahu

स्थापित कर देते हैं, उसकी हम खूब पूजा करते हैं। परन्तु जिस मूरत को स्वयं ईश्वर ने गढ़ा है, उसकी हम उपेक्षा करते हैं। हमारे इस रवैये का विरोध सद्गुरु कबीर साहब करते हैं। आप विचार कर देखें आपके गाँव की गली में कहीं कोई पत्थर पड़ा हो, आप रोज उस पर पैर रखकर चलते हैं, कभी उस पर थूक भी देते हैं, बच्चे मल-मूत्र भी कर देते हैं, उसी पत्थर को आप रात में चुपचाप उठा लो, किसी नीम या पीपल के वृक्ष के नीचे रख दो, चार आने का बंदन लगा दो, एक नारियल फोड़ दो, अगरबत्ती खोंस दो, ध्वजा लगा दो, सुबह होते ही वहाँ भक्तों की लाइन लग जायेगी।

जिस पत्थर पर वे कल पैर रखकर चलते थे उसी पत्थर पर अपना माथा पटकना शुरु कर देंगे। चार आने का एक बंदन पत्थर को देवता बना देता है लेकिन उस बंदन में इतनी शक्ति नहीं है कि हमारी पत्नी जो हमारे नाम से जीवन भर उसे अपने माथे पर रगड़ती है, उसे देवी बना सके। हम अपनी पत्नी को, कभी देवी सा सम्मान नहीं देते। पर वहीं चार आने बंदन उस पत्थर पर रख दिया जाय तो उसे देवता मानकर जीवन भर उसकी पूजा करते हैं।

अगर सच में पत्थर में आस्था है, तो आप किसी भी पत्थर की पूजा करिये। लेकिन हम ऐसी रुढ़िता में फँसे हैं कि स्वयं द्वारा निर्मित मूर्ति की ही पूजा करेंगे। हमारी इसी संकीर्ण मानसिकता का साहब विरोध करते हैं।

समाधि मंदिर में भी बहुत सी झाँकियाँ लगी है, वे पूजा के लिये नहीं लगी है। उनमें सद्गुरु कबीर साहब का सारा जीवन-दर्शन इस उद्देश्य से चित्रित किया गया है आज की नई पीढ़ी को साहित्य पढ़ने का शौक नहीं है। टेलीविजन घण्टों देख सकते हैं, लेकिन साहित्य खोलकर नहीं पढ़ सकते। हमारे पंथ के जो नई पीढ़ी के बच्चे हैं, उन्हें सदगुरु के बार में जरा भी ज्ञान नहीं। सदगुरु कहाँ प्रगट हुए, सदगुरु का पालन-पोषण किसने किया ? उन्होंने दीक्षा किससे ली ? किसे अपना गुरु बनाया ?

सदगुरु का कार्य क्या था ? वे कैसे साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करने का प्रयास करते थे ? वे किस तरह हिन्दू और मुसलमानों का झगड़ा मिटाने का प्रयास करते थे ? वे किस तरह मानव समाज में व्याप्त अंध-विश्वास को मिटाने का प्रयास करते थे ? इन सब बातों का ज्ञान उन्हें नहीं है। पहले के लोग बड़ी श्रद्धा और मनन्पूर्वक इन सब साहित्यों का अध्ययन करते थे, लेकिन नहीं पीढ़ी के बच्चे ऐसा नहीं करते। सदगुरु के जीवन दर्शन से उनको भी अवगत कराना आवश्यक लगा, इसलिये जब मेरा कार्यकाल आया तो सबसे पहले मैंने यही कार्य किया। समाधि मंदिर में मैंने सदगुरु के जीवन दर्शन की झांकियाँ बनवायी और हर झांकी से संबंधित सारा वर्णन मैंने लिखवा दिया है।

एक बार जो व्यक्ति अंदर जाता है, भले ही किताब न पढ़ता हो, पर जब झांकियों को देखता है और हर झाँकी के साथ जो भी लिखा हुआ है, उसे पढ़ता है तो मोटा-मोटा उसे कबीर-दर्शन का ज्ञान तो हो ही जाता है। सद्गुरु कबीर साहब के जीवन के संबंध में कबीर पंथ के संबंध में एक सामान्य ज्ञान उसे हो ही जाता है और रहा सवाल समाधि स्थल का तो ये समाधियाँ कृत्रिम नहीं है। हम उस समाधि की पूजा करते हैं, जो हमारे वंशगुरु की हैं जिस घट में स्वयं पुरुष उतरे।

सब घट मेरा सांइया, सूनी सेज न कोय।
बलिहारी वा घट की, जा घट परगट होय।।

जिस घट के द्वारा वह पुरुष प्रगाढ़ रूप में हमें अपनी छवि दिखाता हो और जीवन पर्यन्त जिसके चरणों में अपने शीश को झुकाया उस घट को छोड़कर अगर वह पुरुष चले गये, तो वह घट तो बलिहारी है जिसमें वह उतरे थे और उस घट की, उस शरीर की हमने समाधि तैयार की। तो न चाहते हुए भी हमारा मस्तक वहाँ श्रद्धा से झुक ही जाता है। इसमें कोई धर्मान्धता नहीं है। यदि उग्रनाम साहब की कृत्रिम समाधि हम अन्यत्र स्थान पर बनाकर,

D. K. Sahu

उसकी पूजा करें तो यह धर्मान्धता है।

उग्रनाम साहेब की एक समाधि है और वह दामाखेड़ा में है, उसकी हम पूजा करते हैं, वहाँ अपना मस्तक झुकाते हैं। मुक्तामणि नाम साहब की समाधि कुदूरमाल में है। कभी मन में इच्छा जाग्रत होती है तो कुदूरमाल जाकर वहीं हम नतमस्तक होते हैं। सारे वंशगुरुओं की समाधियाँ, जहाँ उन्होंने अपना शरीर छोड़ा वहीं स्थित है। हमारे मन में कभी भी उन समाधियों के दर्शन की, इच्छा जाग्रत होती है तो हम वहीं जाकर अपना शीश झुकाते हैं। अनेक स्थानों पर उनके नाम से हमने कृत्रिम समाधियाँ नहीं बनवा रखी है, और न ही नकली समाधियों की हम पूजा करते हैं। तो इसमें कोई धर्मान्धता नहीं है, इससे साहब के किसी भी वाणी-वचन का हमारे द्वारा उल्लंघन नहीं होता है।

सज्जनों ! सद्गुरु नाम इतिहास का सबसे बड़ा नाम है, इससे बड़ा नाम शब्दकोश में आपको ढूँढे नहीं मिलेगा। सद्गुरु कबीर साहब का केवल नाम ही मानव समाज में मानवता का संदेश लेकर चलता है। सच्चाई को निर्भीकता से जो कहते हो, उसी का नाम कबीर है। और सत्य ही जिसका धर्म है और जीवन है, उससे बड़ा महापुरुष और कौन हो सकता है ? जो दुनिया की सबसे बड़ी तपस्या करता है, उससे बड़ा तपस्वी कौन हो सकता है ? साँच बराबर तप नहीं साहब ने ही कहा है-सत्य से बढ़कर और कोई दूसरी तपस्या दुनिया में नहीं है। जो सत्य की तपस्या करता है, जो सत्य का संवाहक हो, वही तो सत्यपुरुष है और जो सत्यपुरुष है, वही तो सदगुरु हो सकता है।

सद्गुरु कबीर साहब ऐसे ही सदगुरु थे, जिनके रोम-रोम में सत्य बसा था। उन्होंने जीवन में कभी कागज पर लिखी हुई बातों को नहीं कहा, जब भी कुछ कहा आँखों देखी बात ही कहा। अपने कहने के सम्बन्ध में उन्होंने कहा- मैं कहता आँखिन की देखी। संसार के लोगों से उनके विचार कभी मेल नहीं खाते थे। संसार के लोग पूछते भी थे कि आपका मन हमारे मन से मेल क्यों नहीं खाता, तो साहब स्पष्ट कहते थे-

तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे।
मैं कहता आँखिन की देखी, तू कहता कागज की लेखी।
मैं कहता सुरझावन हारी, तू राखयो उरझाई रे।

मैं बात सुलझाने की कहता हूँ और तुम हमेशा बात को उलझाते हो। साहब आँखिन देखी बात कहते थे, इसलिये उनकी वाणी में जो प्रभाव है, वह दुर्लभ है। संसार में बहुत से संत हुये। सभी संतों के वाणी-वचन मानव समाज के लिये उपयोगी है, लेकिन जो प्रभाव सद्गुरु कबीर साहब के वाणी वचनों में है, वह अन्यत्र नहीं मिलता क्योंकि सद्गुरु कबीर साहब के वचन उनके अनुभवों पर आधारित है। इसलिये जब सद्गुरु कबीर साहब के वाणी वचनों को हम सुनते हैं, तो हम पर जबरदस्त असर होता है।अन्य संत-महात्माओं के वाणी-वचनों को सुनने के पश्चात एक बार हम सोंचे, न सोंचे, लेकिन सद्गुरु कबीर साहब जब कुछ कहते हैं तो ज्यादा नहीं कम से कम एक क्षण के लिये हमें सोचना ही पड़ जाता है। उनकी वाणी हमारे हृदय को बेधती है। चूँकि उनके जीवन में केवल सत्य ही था, और सत्य बड़ा कड़वा, कठोर होता है इसलिये कहीं-कहीं सद्गुरु कबीर साहब के वाणी-वचन हमें बड़े कठोर भी लगते हैं। लेकिन सद्गुरु कबीर साहब जब जहाँ जैसी परिस्थिति बनती थी, उसके अनुरूप ही अपनी बात कहते थे। जब आनन्दमय होते थे, तो गाने लगते-

होत आनंद आनंद भजन में, होत आनंद आनंद।
और मन मस्त हुआ तो क्यों बोले।

जब मन मस्त हो जाता था तो बोलते ही नहीं थे, मगन हो जाते थे और दूसरों से भी कहते थे क्या बोलना?

मन मस्त हुआ तो क्यों बोले।

हल्की थी तब चढ़ी तराजू, पूरी भई तो फिर क्यों तोले।।

जिसमें कुछ हल्कापन हो वो बार-बार अपने को देखता है,जाँचता परखता है, लेकिन जो पूरा हो गया फिर उसे तौलने की क्या आवश्यकता है? सद्गुरु कबीर साहब का व्यक्तित्व बड़ा अनूठा है। सद्गुरु कबीर साहब को अन्य संतों ने सन्त शिरोमणि कहा, क्योंकि वे विलक्षण थे। भले ही गाते हों कुछ लेना न देना मगन रहना और-

कबीर तेरी झोपड़ी, गल कटियन के पास।

जो करेगा सो भरेगा, तू क्यों फिरे उदास।।

तुझे क्या करना है ? दुनिया जो कर रही है, उसे करने दो। जो जैसा करेगा वैसा भरेगा, हमें क्या चिन्ता ? कसाइयों के मुहल्ले में रहते थे जहाँ अगल-बगल में प्रतिदिन बकरे काटे जाते थे। कसाइयों को गल कटियन कहा जाता है, जो गला काटते हैं। साहब कहते थे कि अपनी करनी वो भरेंगे, हमें अपनी करनी देखनी है और कभी वही सदगुरु इतने चिन्तित होते थे, कि उनकी आँखों से आँसू बहने लगते थे।

सुखिया सब संसार है, खावै और सोवै।

दुखिया दास कबीर है, जागै और रोवै।।

सद्गुरु कबीर साहब अपने दुख से दुखी नहीं होते थे बल्कि वो हमारे दुख से दुखी होकर रोते थे। हमें अपनी चिन्ता नहीं, लेकिन सदगुरु अपने लिये कितने फिक्रमन्द हैं। हमने अनमोल दुर्लभ मानव तन प्राप्त किया है जो बार-बार हमें नहीं मिलता है।

मानुष ऐसा जीवणा, मिले ना दूजी बार।

पाका फल जो गिर पड़ा, बहुरि न लागे डार।।

दुबारा यह मानुष तन हमें प्राप्त नहीं होगा। इस दुर्लभ मानुष तन को हम किस प्रकार गंवा रहे हैं ? हमें जरा भी इसकी चिन्ता नहीं है कि इस मनुष्य जीवन का सदुपयोग करके अपना जीवन सफल बना लें। हमारी इस बेफिक्री, की नींद को देखकर साहब इतने दुखी हैं कि रो रहे हैं। हम सत्यनाम धुन में गाते हैं-

मानव तन तुम पाय के प्यारे, सोते हो क्यों पाँव पसारे।

ज्ञानहीन नर आँखे खोल, सत्यनाम सत्यनाम सत्यनाम बोल।

गर्भवास में भक्ति कबूले, बाहर आय तुम उनको भूले।

पूरा करो जब अपना कौल, सत्यनाम सत्यनाम सत्यनाम बोल।।

साहब कहते हैं-

कबिरा वा दिन याद कर, पग ऊपर तल शीश।

मृत्युलोक में आय के, बिसर गया जगदीश।।

यहाँ वह नाम अपना ले रहे हैं, लेकिन स्मरण हमें करा रहे हैं। गर्भ में जब बच्चा होता है, तब उसका पैर ऊपर और सिर नीचे होता है। जब गर्भ की काल कोठरी में बन्द था, वहीं से इस जीव ने अपने साहब को पुकार लगायी कि मुझे यहाँ से मुक्त करो। हमारी उस पुकार को सुनकर साहब ने हमें मुक्त किया, यह मनुष्य जीवन प्रदान किया और इस अमूल्य मानुष जीवन को हम किस मोह की नींद में गँवा रहे हैं। मनुष्य जीवन को जागने के लिये है, सोकर तो हमने अनेक जीवन बिता दिये। मनुष्य जन्म पाकर हम नहीं जागे तो फिर कब जागेंगे ? यह अवसर हमें बार-बार तो नहीं मिलना है और यदि इस अवसर को गंवा दिया, निजलोक जाने के बजाय हमें फिर चौरासी के रास्ते पर जाना पड़ेगा।

साहब का भजन है–

चौरासी घर मरम के, पौ पे अटकी आय।
अबकी पौ जो न परे, तो फिर चौरासी जाय।।

दृष्टांत देने में साहब का जवाब नहीं है, दृष्टांत दिया क्यों जाता है ? सन्तजन अनुभवी होते हैं, उनके अनुभव का स्तर हमारे अनुभव के स्तर बहुत ऊपर होता है, जिस तक हम नहीं पहुँच सकते। अपनी बात समझाने के लिये संत हमें दृष्टांत अर्थात् ऐसा उदाहरण देकर समझाते हैं कि जिसे हम भली-भाँति समझते हों। चौपड़ के खेल का सुन्दर उदाहरण देकर साहब हमें कितना बड़ा सन्देश दे रहे हैं। चौपड़ के खेल का सुन्दर उदाहरण देकर साहब हमें कितना बड़ा संदेश दे रहे हैं। चौपड़ का खेल जिसे पासा भी कहा जाता है। चौरासी घर मरम के उस चौपड़ के खेल में पूरे चौरासी घर होते हैं और चौपड़ की जो गोटियाँ होती है, वे पूरे चौरासी घर घूमकर आखिरी घर पहुँचती है, तब हमें एक की आवश्यकता होती है जिसे पग्गा या पगुरा भी बोलते हैं।

पगुरा से बाजी लगी, परे अठारह दाँव।
सार गँवाई हाथ से, सिर पर लागे घाव।।

तब हमें बहुत ही सावधानी से पासा फेंकना पड़ता है। इतने ध्यान से पासा फेंकें कि एक ही पड़े और हमारी गोटी डूब जाय, उसका आवागमन, जो वह चौरासी घरों में भटक रहा है, बन्द हो जाय, वह स्थिर होकर अपने घर में चला जाय।

आखिरी घर पर पहुँचकर हमारी यही जिम्मेदारी रह जाती है कि हम मनुष्य जन्म में आकर कुछ ऐसी व्यवस्था कर लें, कि चौरासी का चक्र छूट जाये। पता नहीं कितने अनंत जन्मों से हम दौड़ रहे हैं और कितनी योगिनियों को हमने धारण किया है। अब इस मनुष्य योनि में पहुँचे हैं जिसके बारे में साहब बार-बार कहते हैं–

रात गँवाई सोय के, दिवस गंवाया खाय।
मानुष जन्म अमोल का, कौड़ी बदली जाय।।

इस अमूल्य मानव जीवन को हम किस तरह कौड़ियों में बदल रहे हैं किस तरह बर्बाद कर रहे हैं ? तो मानव समाज को जागृत करने का कार्य साहब करते हैं। बार-बार समझाते हैं, फिर भी हम नहीं समझते तो साहब निराश होते हैं।

ये जग अंधा, मैं केहि समझाऊँ, इक दो होय तेहि बतलाऊँ।
पानी का घोड़ा पनन असवरवा, सबही भुलाना पेट के धन्धा।

सब अपने पेट के धंधे में उलझे हुए हैं और पवन असरवा ये जो स्वर चल रहे हैं अर्थात प्राण वायु। तो सब पेट के धंधे में ऐसा उलझे हैं कि सन्तों की बात कोई समझने को ही तैयार नहीं है। जो व्यर्थ के काम सीखा रहे हैं, उनके पीछे दुनिया दौड़ी चली जा रही है। जो ऐसे कार्य हमें सीखा रहे हैं जिससे हमारा जीवन बर्बाद होनै ही होना है, उनके द्वारा सिखलाई गयी बातों को हम कितनी जल्दी सीख जाते हैं–

यह जग ऐसे आंधरा, जैसे अंधी गाय।
बछड़ा था सो मर गया, ऊभी चाम चटाय।।

दुहने वाले कितने चालाक होते हैं। दूध देने वाली गाय का बछड़ा अगर मर जाय, उस मरे हुए बछड़े की खाल में भूसा भर कर गाय के सामने रख देते हैं। गाय सोचती है मेरा बछड़ा जिन्दा है, उसे चाटती रहती हैऔर पीछे वह ग्वाला उस गाय का सारा दूध दुह लेता है।

D. K. Sahu

जिस प्रकार ग्वाला गाय को मूर्ख बनाता है, वैसे ही मानव समाज में जो धर्म के समाज के, राजनीति के ठेकेदार बने बैठे हैं, वे लोग भी संसार का इसी तरह दोहन करते हैं। हम भी अंधे हैं, हम नहीं समझ पा रहे हैं कि जिस वस्तु को सामने रखकर हमें दुहा जा रहा है, उससे हमारा कुछ भी भला नहीं होगा। फिर भी हम मूर्ख बने जा रहे हैं। आज की तारीख में यह सबसे बढ़िया धंधा है कि बाबा बन जाओ, थोड़ा सत्संग-प्रवचन करना सीख जाओ और यह कोई बड़ी बात नहीं 5-10 पुस्तकों का अध्ययन कर लो, कुछ ही दिनों के अभ्यास से बहुत अच्छे वक्ता बन जाओगे। बोलना अर्थात अभिव्यक्ति कला की देन है लेकिन अनुभूति को साधना से मिलती है। अनुभूति और अभिव्यक्ति में बहुत अन्तर है। इसलिये साहब ने कभी कथनी और करनी करने वालों को अधिक महत्व नहीं दिया। साहब कहते हैं-

कथनी कथे सो पूत हमारा, करनी करे सो नाती।
रहनी रहे सो गुरु हमारा, हम रहनी के साथी।।

कोई भले ही बड़ी-बड़ी बातें न करता हो, बड़े-बड़े काम न करता हो, लेकिन जिसका अन्त:करण निश्चल, स्वच्छ एवं पवित्र है, उसे ही मैं बड़ा मानता हूँ। दुनिया को सुनाने के लिये लोग बड़ी-बड़ी बातें कर देते हैं, दुनिया को दिखाने के लिये लोग बड़े-बड़े काम कर देते हैं, यह कोई बड़ी बात नहीं है। कथनी और करनी करना कोई बड़ी बात नहीं, रहनी रहना सार्थक बात है। रहनी रहे सो गुरु हमारा, कितना बड़ा दर्जा दे रहे हैं साहब उसे। संध्या पाठ में भी ये बात आती है-

साधु संत की अधिक महिमा, रहनि कुण्ड नहाइये।
काम क्रोध विकार परिहरि, बहुरि न भवजल आइये।।

जो मन के विकारों को दूर करके अपने मन को स्वच्छ कर लेता है, जिसकी रहनी-गहनी शुद्ध एवं स्वच्छ हो, वह सन्त कहलाता है। उस सन्त की महिमा गाने से ही हमारा जीवन सार्थक है। लेकिन धर्मान्धता में फंसे हम लोग रहनी-गहनी नहीं देखते, कथनी और करनी देखते हैं कि कौन बहुत अच्छा प्रवचन करता है, कौन बहुत लच्छेदार भाषण देता है और कौन अच्छे से कार्य करता है, कौन बढ़िया मठ-मंदिर बनाकर बैठा है, जिसके मठ में अच्छी व्यवस्था है ? इन बातों को देखकर हम प्रभावित हो जाते हैं आँख मूंदकर उनके पीछे दौड़ पड़ते हैं, इसी धर्मान्धता में अन्धे हम लोगों का, ममता में अन्धी गाय के समान वे लोग दोहन कर लेते हैं।

आधुनिक समय में यह धंधा हमारे भारत देश में बहुत फल-फूल रहा है। एक बाबाजी ने मंदिर बना रखा था, वहाँ रोज आरती-पूजा होती थी। बाबाजी और कोई काम-धाम नहीं करते थे। प्रतिदिन शाम को आरती के वक्त सैकड़ों हजारों भक्त इकट्ठा हो जाते थे, खूब नगाड़े-बाजे के साथ आरती होती थी, उसके बाद बाबाजी थाली लेकर भक्तों के बीच चले जाते थे। सारे भक्त आरती लेते थे, उसके बाद उसमें पैसा डालते थे।

एक आरती घुमा देने से इतनी आमदनी हो रही है तो आदमी क्यों मेहनत करेगा ? लेकिन वो बाबाजी थोड़े वृद्ध हो गये थे, उनकी आँख थोड़ी कमजोर हो गयी थी। कुछ शरारती बच्चे क्या करते थे ? नकली नोट आरती में डाल देते थे और पुजारी बाबा से कहते थे कि बाबाजी, हमने दस रुपये का नोट डाला है, लेकिन हमें पाँच रुपये चढ़ाना है। दस रुपये का नकली नोट डालकर पाँच रु. का असली नोट उठा लेते थे। बाबा जी की आँखें कमजोर थीं, समझ नहीं पाते थे। फिर कुछ दिनों के बाद उन्होंने अपना चश्मा बनवा लिया चश्मा लगाने के बाद उन शरारती बच्चों ने फिर ऐसा किया। दस रुपये का नकली नोट रखा, पाँच रु. का असली नोट उठाने लग गये तो उन्होंने उस नोट उठाने वाले बच्चे का हाथ पकड़ लिया और बोले इतने दिन तक बेवकूफ बनाता रहा, नकली डाल रहा है और असली उठा रहा है। बच्चे शरारती तो थे ही, उन्होंने कहा कि तुमने कौन सा असली भगवान बिठा रखा है ? जो

असली नोट चढ़ोत्तरी में ले रहे हो। नकली भगवान बिठाकर आरती ले रहे हो और असली नोट खींच रहे हो। तो एक चोर का माल अगर दूसरे चोर ने थोड़ा खा भी लिया तो तुम्हें क्या दिक्कत हो रही है ? ऐसे लुटेरे गली-गली घूम रहे हैं और समाज को लूट रहे हैं। ऐसे लोगों को साहब जम के लताड़ते हैं। भले ही कहते हो-

दया गरीबी बंदगी, समता शील उपकार।
इतने लक्षण साधु के, कहे कबीर विचार ।।

जिसमें दया हो, गरीबी हो, बंदगी हो, समता हो, शील हो, उपकार हो, वही साधु है। जो इतना दयावान हो कि सब पर समभाव से दया करे।

दया कौन पर कीजिये, का पर निर्दय होय।
साहब के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय।।

कीड़े से लेकर हाथी तक सब साहब के ही जीवन हैं, किसी में कोई अन्तर नहीं तो किस पर दया करोगे और किस पर निर्दयता दिखलाओगे ? सभी प्राणी एक ही मालिक के हैं, सबको अपने समान समझो। दया करो धर्म को पालो, जग से रहो उदासी।

अपना सा जीव सबको जानो, तभी मिले अविनासी।।

दया ही धर्म है। साहब ने कहा है-जहाँ दया तहाँ धर्म है। तुलसीदास जी ने भी कहा है-दया धर्म का मूल है। उन्होंने तो दया को धर्म का मूल तक कह दिया। उपरोक्त साखी में साहब कह रहे हैं इस जड़ जगत से ज्यादा मोह मत करो, इसकी आसक्ति में मत फँसो, उदास मन से कहो। जैसे तुम हो, वैसे दूसरों को समझो। तुम्हें चोट लगे तो दर्द होता है, दूसरों को भी दर्द होता है। तुम्हें कोई गाली दे, तो तुम्हें दुख होता है, दूसरों को भी दुख होता है। तुम्हारा कोई नुकसान करे, तो तुम्हें दुख होता है, दूसरों को भी होता है। हमें कोई मारे पीटे हमें पीड़ा होती है, दूसरों को भी होती है।

कबीर साहब ठगाइये और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख होत है, और ठगे दुख होय।।

जब आप किसी और को ठगते हैं, तो आपको बड़ी खुशी होती है, लेकिन कोई आपको ठग लेता है तो आपकी क्या स्थिति होती है ? तो अपना सा जीव सबको मानिए।

जो हमारा भला चाहते हैं उनकी बात हमें समझ में नहीं आती है, बार-बार समझने किसी संत के पास जाते हैं कि हमें दया करके ये समझा दो कि हमारा जीवन सफल कैसे होगा ? कहने की जरुरत नहीं है, साहब खुद ही समझा रहे हैं। वे परमार्थी हैं, उपकार तो उनके जीवन में सन्निहित है। सन्तों के अंदर समता का भाव होता है, वे किसी में भेद नहीं करते ।

इससे बड़ी समता का भाव और क्या हो सकता है ? जो पशु और मनुष्य में कोई भेद नहीं करते, जो सज्जन और दुर्जन में कोई भेद नहीं करते। लेकिन क्या सदगुरु कबीर साहब खुद अपने इस वचन का पालन करते हैं ? यही तो उनके व्यक्तित्व का अनोखापन है। दूसरों से कह रहे हैं-

कहें कबीर चाण्डालहू आई। ताकर चरण पखारो भाई।।

पर दु:ख मानव समाज में बुराइयाँ फैला रहे चाण्डालों को किसी कदम पर माफ करने के लिये तैयार नहीं, ढूँढ-ढूँढकर एक-एक को बड़े कठोर वचनों में फटकारते हैं। इसीलिये मैं कहता हूँ कि संसार में सन्त तो बहुत हुए परन्तु सदगुरु कबीर साहब ऐसे सन्त नहीं थे जिनका जीवन किसी मठ या मंदिर में बैठकर, मंजीरा बजाकर भजन गाते बीत गया हो। सदगुरु कबीर साहब मानव समाज के सजग प्रहरी थे। वे मानव की तमाम व्यवस्थाओं पर बड़ी

सूक्ष्म दृष्टि रखते थे। चाहे वो राजनीतिक व्यवस्था हो, धार्मिक व्यवस्था हो या सामाजिक व्यवस्था हो, जहाँ भी उन्हें कोई कमी, बुराई, कुरीतियाँ नजर आती थीं, वे उसका जमकर विरोध करते थे और ऐसी विसंगतियों को मानव समाज से पूरी तरह समाप्त करने का प्रयास करते थे।

जैसे मैंने थोड़ी देर पहले मूर्ति पूजा के संबंध में चर्चा की, लोग मूर्ति की पूजा कर पत्थर को सम्मान दे रहे हैं लेकिन जीते जागते प्राणियों को सम्मान नहीं दे रहे। निर्जीव पत्थर के लिये सजीव, निरीह, मासूम प्राणियों की बलि चढ़ा दी जाती है आज भी समाज में बलि प्रथा का प्रचलन है। जब नवरात्रि का पर्व आता है तो ऐसे अनेक मंदिर हैं, जहाँ हजारों-लाखों बकरे और मुर्गे कट जाते हैं। लोग कहते हैं ऐसा क्यों कर रहे हो, तो जवाब मिलता है ये तो देवी माँ की माँग है।

सारा संसार एवं संसार के प्राणी भगवान के ही हैं उसे जब जो चाहिए, वह खुद ले लेगा तुमसे क्यों मांगेगा? और माँ जीव देती है कि लेती है ? भगवान का घर तो वह है, जहाँ मुरदा भी जिन्दा हो जाय। लेकिन जहाँ जिंदा मुरदा हो जाता है वह भगवान का घर नहीं है, वह कसाई का घर है उसे मंदिर नहीं कहा जा सकता जहाँ से जीवन ऊर्जा मिलती है, उस परम ऊर्जा का स्रोत परमात्मा है। उससे जीवन मिलता है लेकिन हम अंध-विश्वास का प्रचार करते हैं और समाज के स्वार्थी लोगों ने इतना भय फैला रखा है कि आम लोगों को धर्म के ही नाम पर धर्म भीरु बना दिया है। धर्म के नाम पर डरे, सहमें हुए लोगों का समाज है हमारा मानव समाज, जहाँ धर्म एवं भगवान के नाम पर लोगों का शोषण होता है। हर मनुष्य के जीवन में कोई न कोई समस्या होती है।

यह संसार तो है ही दुखों का गाँव, यहाँ जो जन्म लेता है उसके जीवन में कोई न कोई दुख, कोई न कोई समस्या आती ही है। साहब ने कहा भी है-तन घर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया जगत में।

शरीर धारण करके, इस संसार में सदा कोई सुखी नहीं रहा, सुख-दुख उसके जीवन में आते-जाते रहते हैं। सब दिन होत न एक समाना। हमारी परिस्थितियाँ बदलती रहती है। कभी दिन अच्छे होते हैं तो कभी किसी संकट में पड़ जाते हैं और जब हम मुसीबत में पड़ते हैं तो हम ऐसे ही धर्म के ठेकेदारों के पास चले जाते हैं जिसे आप लोग ओझा या बैगा कहते हैं। कई ऐसी बीमारियाँ हैं, जिसके कारण आदमी को चक्कर आ जाता है, वह छटपटाने लगता है, उसका शरीर अकड़ने लगता है, मुँह से झाग निकलने लगता है, तो लोग समझते हैं कि कोई और ही बात है। तुरन्त उसे लेकर ओझा के पास चले जाते हैं, जो उनको और डरा देता है। अरे! इसके अन्दर तो प्रेतात्मा घुस गयी है, उस पर तो भूत-प्रेत का साया है, ये तो बड़े संकट में है। मुसीबत में पड़ा हुआ आदमी और डर जाता है, पैरों में गिर जाता है कि बाबा कुछ भी करो, इससे पीछा छुड़ाओ। तब ओझा कहता है इसके लिये तो यज्ञ करना पड़ेगा, और बलि देनी पड़ेगी। एक अच्छा, मोटा-ताजा बकरा ले आओ, पाँच मुर्गे और पाँच बोतल दारू से काम हो जायेगा। मुसीबत में पड़ा हुआ आदमी क्या करे ? जो नहीं करना चाहिये, वह भी करते हैं।

भूत-प्रेत का डर, समझ से बाहर है। यहाँ भी आते हैं लोग, सोचते हैं यह भी मठ-मंदिर है, यहाँ जो महाराज जी रहते हैं, वे भी भूत-प्रेत भगाते होंगे। इस तरह कोई व्यक्ति जब बीमार हो जाता है तो लेकर आ जाते हैं और कहते हैं, साहब जी हम बड़ी मुसीबत में हैं।

मेरे पूछने पर कहते हैं, इसकी हालत देखिये। मैं कहता हूँ मुझे लगता है ये बीमार है, इसे कोई शारीरिक तकलीफ हो गयी है, जिसके कारण इसकी ऐसी स्थिति बन गयी है। इसे किसी अच्छे डॉक्टर के पास ले जाओ। नहीं-नहीं, साहब जी ये डॉक्टर का काम नहीं है, ये कोई और ही बात है। मैं पूछता हूँ, क्या बात है भैया ? साहब जी इसको बाहरी हवा लगी हुई है। मैं कहता हूँ हाँ भई बाहरी हवा ले रहा है, इसीलिये जिन्दा है। अगर इसकी सांस बन्द हो जाये, तो ये मर जायेगा। नहीं-नहीं साहब जी वो बात नहीं । इसके अन्दर आत्मा प्रवेश कर गयी है।

मैं कहता हूँ बिल्कुल आत्मा प्रवेश कर गयी है, इसीलिये तो ये जिन्दा है और इसके अन्दर क्या, मेरे अंदर भी आत्मा है, तेरे अन्दर भी आत्मा है, हर प्राणी के शरीर में आत्मा है, तभी वह जीवित है। क्या बगैर आत्मा के कोई शरीर जीवित रहता है ? नहीं साहब जी वो बात नहीं उसकी आत्मा तो है ही, कोई दूसरी आत्मा उसके अन्दर और घुस गयी है। हद करते हो ? तुम्हारे ही बुजुर्ग कहते हैं, कि एक म्यान में दो तलवारें कैसे आयेंगी ? और तुम कहते हो, एक शरीर में दो आत्मायें आ गयी है। नहीं, साहब जी आप मजाक मत करो, हमें संकट से उबारो। ये बहुत ही दुष्ट आत्मा है। मैं कहता हूँ भैया तुम कौन सा शरीफ आत्मा हो। क्या तुम दूसरों का बुरा नहीं करते, दूसरों को परेशान नहीं करते ? क्या तुम अपने गाँव, नगर में उपद्रव नहीं करते ? और भूत-प्रेत किसे कहते हैं ? जिस आत्मा को हमारे सन्त पुरुष ईश्वर का अंश कह रहे हैं-

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख राशी।।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है यह जो जीव है, यह जो आत्मा ह, वह ईश्वर का अंश है। तुम्हारे शास्त्र कह रहे हैं यह जीव ईश्वर का अंश है और ईश्वर का अंश ईश्वर ही होगा। एक किलोग्राम सोने से दस ग्राम सोना काटकर अलग कर दोंगे तो वह पीतल नहीं बन जायेगा, वह सोना ही रहेगा। उसमें भी उतनी चमक रहेगी, उसकी भी वही कीमत होगी। ईश्वर के अंश जीव को हम कैसे भूत-प्रेत के नाम से पुकार देते हैं, हमें लज्जा भी नहीं आती कि हम क्या कह रहे हैं, क्या सोच रहे हैं ? और हमारे इसी अंध विश्वास का स्वार्थी लोग फायदा उठाकर हमारा शोषण करते हैं।

साहब को ये सब चीजें बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होती थी। वे हमें ऐसे ठगों से बचाना चाहते हैं इसीलिये जब भी कोई ऐसा व्यक्ति उन्हें नजर आ जाता है जो मानव समाज को कलंकित कर रहा है, उसे साहब किसी भी कीमत पर नहीं बख्शते, बड़े ही कठोर वचनों में फटकारते हैं। भले ही कबीर साहब अपने वाणी-वचनों में समता एवं दया की बात करते हों, लेकिन ऐसे लोगों पर साहब दया नहीं करते जो दाढ़ी-जटा बढ़ाकर, कंठी-तिलक लगाकर संत का भेष बनाकर घूम रहे हैं। साधू-सन्तों के प्रति लोगों में बड़ी आस्था है, कुछ बहरुपिये, इस बात का फायदा उठाते हैं साधू-सन्तों सी वेशभूषा बनाकर वे लोगों को ठगते हैं, ये सब पेट भरने के धन्धे हैं-

जोगी जंगम सेवड़ा, सन्यासी दरवेश।
सांई के परिचय बिना, सब पेट भरन का भेष।।

और भी अनेक तरह की बुराइयाँ या अन्ध-विश्वास समाज में व्याप्त हैं। जैसे मूर्तिपूजा तो साहब का यही कहना है पत्थर में आस्था है, तो पत्थर को पूजो लेकिन ये आस लेकर मत पूजो कि पत्थर पूजने से मुझे परमात्मा मिल जायेगा। पूजा करने की कहीं कोई मनाही नहीं है जहाँ आस्था है, तुम्हारी श्रद्धा है, उसकी पूजा करो, लेकिन कोई आस लेकर पूजा मत करो, वर्ना जिस दिन तुम्हारा विश्वास टूटेगा, उस दिन तुम्हें ही दुख होगा।

वह परमात्मा घट-घट में कण-कण में व्याप्त है, इस लिहाज से पत्थर भी पूजनीय है, लेकिन यह भेद-भाव क्यों ? साहब पूजा पाठ का नहीं, इस भेदभाव का विरोध करते हैं। इसीलिये उन्होंने कहा है-

अवधू भेद से भेख है न्यारा।

जो सच्चा संत होगा, उसके जीवन में कोई भेद नहीं होगा। वह किसी से कोई भेद नहीं रखेगा लेकिन हम भेद रखते हैं। हम जिसे मान्यता देंगे, उसे ही पूजेंगे। हमारी ऐसी ही धर्मान्धता का स्वार्थी तत्व लाभ उठाते हैं और हमारा ही शोषण करते हैं। जो हमारा भला चाहते हैं, कम से कम उन्हें तो हम पहचानें। दुनिया के लिये तो सारा जीवन खपा देते हैं, लेकिन जो हमारे जीवन का कल्याण चाहते हैं, उनकी बातों को समझने के लिये कम से कम थोड़ा-सा समय निकालें। भौतिक वस्तुओं को समझने के लिये, उस पर अमल करने के लिये घंटों बिता देते हैं,

लेकिन अपने स्वरूप को जानने के लिये आत्मचिंतन के लिये कुछ क्षण तो निकालें। मैं संसार में बड़े विचित्र-विचित्र लोगों को देखता हूँ जो हमारे समाज में बुद्धिजीवियों की श्रेणी में आते हैं।

जब कला का प्रदर्शन होता है, आर्ट गैलरी में तो किसी नामचीन कलाकार की कृतियाँ (पेंटिंग्स) लगा दी जाती है तब अपने आपको जो बुद्धिजीवी समझते हैं, ऐसे लोगों की भीड़ वहाँ ज्यादा होती है, हर पेंटिंग के सामने जाकर, एक-एक घंटा खड़े घूरते रहते हैं, पता नहीं क्या समझने का प्रयास करते हैं ? गुलाब के फूल की पेंटिंग बनी हुई है, उसे देख रहे हैं। पूछने पर कि क्या देख रहे हो ? बोलते हैं मैं चित्रकार की जो ये कृति गुलाब का फूल बनाया है, उसे समझने का प्रयास कर रहा हूँ। प्रकृति में ईश्वर ने जो वास्तविक गुलाब का फूल खिलाया है उसके सामने उसे जानने और समझने के लिये कभी दो मिनट खड़ा नहीं होता और बड़ा बुद्धिजीवी बना फिर रहा है।

एक नामी-गिरामी चित्रकार की पेंटिंग लाखों-करोड़ों में बिकती है। कुछ भी रंग पोत देता है और उसको बता देता है किइसका मतलब यह है। ये जो कलर दिखायी पड़ रहा है, उसका मतलब ये है, यहाँ से यह जो लाइन उठी है, उसका मतलब ये है और जो पीछे हल्की-सी बिन्दी है, उसका ये मतलब है। नामी गिरामी पेंटर ऐसे ही चित्र बनाते हैं। एक तीन साल के बच्चे को आप कैनवास पेपर दे दो, ब्रश पकड़ा दो, रंग दे दो। तब वह कुछ भी लीप-पोत देगा, बस इसी तरह की पेंटिंग वह चित्रकार भी बनाता है। उसकी और बच्चे की पेंटिंग में कोई अन्तर नहीं होता है फर्क केवल इतना है कि बच्चा अपनी पेंटिंग का कोई मतलब नहीं बता पाता है क्योंकि वह ईमानदार है दुनिया को बेवकूफ बनाना नहीं जानता। इसलिये बच्चे की पेंटिंग को हम कहीं भी फेंक देते हैं कि उसका कोई मतलब नहीं है और कला के नाम पर कुछ भी पोत दिया और उसको बोलता है माडर्न आर्ट, उसका कुछ भी मतलब बता देता है। वहीं नामी गिरामी पेंटर की आधुनिक कला के नाम पर कुछ भी पुती हुई पेंटिंग जिसे हम माडर्न आर्ट कहते हैं, को खरीदने के लिये लालायित रहते हैं।

अपने आपको होशियार, शिक्षित और आधुनिक कहलाने वाले इन लोगों से बड़ा ठग तो दुनिया में और कोई भी नहीं मिलेगा। कोई ढोंगी, पाखंडी, साधु-सन्त, मठ मंदिर बनाकर जितना जीवन भर में ठगता है, उतना ये लोग एक झटके में ठग लेते हैं। ऐसे लुटेरे हर जगह घूम रहे हैं, और ऐसे लोगों से साहब हमारी रक्षा करना चाहते हैं। लेकिन व्यर्थ की चीजों के लिये हमारे पास समय है और जो हमारे उपयोगी है उसके लिये हम एक क्षण भी नहीं निकाल पाते। यह हमारा कितना बड़ा दुर्भाग्य है।

हमारे हिन्दू समाज को व्यवस्थित रखने के लिये की गयी व्यवस्था है जिसमें समाज के कार्यों को चार भाग में बाँट दिया गया है। इस प्रकार हिन्दू समाज में चार वर्ण है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। ब्राह्मणों को जिम्मेदारी दी गयी कि वह स्वयं शिक्षित एवं संस्कारित हों और समाज को शिक्षित, संस्कारित करें। क्षत्रियों को जिम्मेदारी दी गयी कि समाज की सुरक्षा करें। वैश्य लोगों को जिम्मेदारी दी गयी कि मानव समाज की जो रोजमर्रा की आवश्यकतायें होती है, उन्हें पूरा करें। हर चीज हर जगह नहीं पैदा होती है, जैसे हमारा छत्तीसगढ़ है, यहाँ चावल की खेती होती है, गेहूँ पैदा नहीं होता लेकिन हमें रोटी के लिये गेहूँ भी चाहिये। दूसरे राज्यों जैसे पंजाब, हरियाणा आदि में गेहूँ की खेती होती है, वहाँ चावल नहीं होता है परन्तु चावल उनको भी चाहिये। तो जो वैश्य है, उनको व्यापार सौंप दिया गया कि छत्तीसगढ़ में गेहूँ नहीं पैदा होता, इसलिए आप हरियाणा से, पंजाबसे गेहूँ यहाँ ले आयें ओर हरियाणा, पंजाब में चावल नहीं होता इसलिए आप छत्तीसगढ़ का चावल हरियाणा, पंजाब पहुँचा दें। ताकि दोनों जगह के लोगों को गेहूँ और चावल दोनों मिल सकें।

मतलब हमारी आवश्यकता की जो वस्तुयें हैं, वे हमें सहज रूप से घर बैठे प्राप्त होती रहें, इसकी व्यवस्था की जिम्मेदारी वैश्य लोगों की दी गयी शूद्रों को समाज में और भी अनेक काम थे, उनकी जिम्मेदारी दी गयी। जैसे

बाल बनवानने हैं, दाढ़ी बनवानी है नाई चाहिए। कपड़ा सिलाना है, दर्जी चाहिए। कपड़ा धुलवाना है, इस्त्री करवाना है, तो धोबी चाहिये, खाली पैर नहीं चल सकते, कंकड़-पत्थर चुभते हैं जूते-चप्पल चाहिये, उसके लिये जूते चप्पल बनाने वाले नियुक्त कर दिये गये। जहाँ लोग रहते हैं, वहाँ गंदगी भी हो जाती है तो गाँवों में साफ सफाई करने वाले लोगों की नियुक्ति की गई।

सबने मिलकर समाज के कार्य को चार भागों में बाँट दिया और चार वर्ग को इसकी व्यवस्था दे दी गयी। इस व्यवस्था को साथ-साथ चलना था लेकिन समयानुसार विकृति आना इस संसार का नियम है, तो इस व्यवस्था में भी विकृति आ गयी इसमें एक वर्ग बिल्कुल नीचे दब गया, बाकी तीन ऊपर होगये। हिन्दू समाज के चारों विभाग जातियाँ बन गये और सबसे ऊपर बैठ गया ब्राह्मण फिर क्षत्रिय, फिर वैश्य और नीचे दब गया बेचारा शूद्र सबने मिलकर उसे इतना दबा दिया कि आज की तारीख में वे अपने मौलिक अधिकारों से भी वंचित हो गये हैं।

मानव समाज का एक वर्ग ऐसा है जो षड़यंत्र पूर्वक हजारों-हजार साल से पद और प्रतिष्ठा पर कब्जा किये बैठा है और वहीं एक वर्ग ऐसा है जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित है, न उन्हें ठीक से दो वक्त का भोजन मिलता है, न तन ढंकने को कपड़ा मिलता है। समाज में उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है और नीच जाति का कहा जाता है वास्तव में देखा जाये तो जो दूसरे को नीच समझे उससे बड़ा नीच होगा दुनिया में और कौन ?

सदगुरु कबीर साहब ऐसे ही दलित, शोषित, उपेक्षित लोगों की आवाज बुलन्द करने वाले क्रान्तिकारी सन्त हुये और 600 वर्ष पहले जब यह राष्ट्र धर्म-निरपेक्ष नहीं था उस समय साहब ने जिस तरह की बातें कहीं है, आज भी कोई कह दे, तो उसका सिर धड़ से अलग हो जाय, लेकिन आश्चर्य तो तब होगा जब उसका सिर उसके धड़ पर सही सलामत रह जाये। आज भी कई ऐसे सम्प्रदाय विशेष है, जिनकी खामियों पर एक शब्द भी कह दिया जाये तो कहने वाले को जान के लाले पड़ जाते हैं, जबकि सदगुरु कबीर साहब 600 वर्ष पूर्व कहते हैं-

अरे तू कस ब्रह्मण, हम कस शूदा।
हम कस लोहू, तुम कस दूधा।।
एकै हाड़ चाम मल मूता, एक रूधिर एक गूदा।
एकै बूँद से सृष्टि बनी है, कौन ब्राह्मण कौन सूदा।।

एक ही ईश्वर ने सारे संसार के प्राणियों को बनाया है, फिर कोई कैसे ब्राह्मण हो गया, कोई कैसे शूद्र हो गया ? यदि भगवान दस होते तो ब्राह्मण भगवान ने जिसे बनाया होता, वह ब्राह्मण, क्षत्रिय भगवान ने जिसे बनाया होता, वह क्षत्रिय, वैश्य भगवान ने जिसे बनाया होता, वह वैश्य, शूद्र भगवान ने बनाया होता वह शूद्र, पशु भगवान ने जिसे बनाया, वह पशु तथा मानव भगवान ने जिसे बनाया होता, वह मानव कहलाता। परन्तु जब ऐसा नहीं है तो ये भेद क्यों है ? ऐसी ही विसंगतियों को मिटाने का प्रयास साहब ने अपने जीवन में किया है। यही उनका उद्देश्य रहा है।

इसी उद्देश्य को लेकर वे इस धरा पर आये थे और उन्होंने अपना काम निडर होकर किया। न किसी के सामने झुके, न किसी से डरे, न कहीं रुके। कोई परिस्थिति उनके मार्ग में बाधक नहीं बन सकी। जिस उद्देश्य को लेकर वे इस धरा पर आये थे, जीवन पर्यन्त अपने उद्देश्य की पूर्ति में लगे रहे और सिर्फ इसलिये सफल हुए क्योंकि उनके भीतर चरित्र बल था। चरित्र बल सबसे बड़ा बल होता है। साहब ने जो वचन अपने मुख से कहे, उनके वचनों को अक्षरशः हम भी बोलते हैं, लेकिन उनके बोलने में और हमारे बोलने में कितना अन्तर है ? जब सदगुरु कबीर साहब अपनी बात कहते हैं तो उनकी बातों में कितना प्रभाव है ? और उन्हीं बातों को जब हम कहते हैं तो कितना प्रभावहीन लगता है ? बड़े अच्छे-अच्छे भजन कलाकारों के भजनों के कैसेट धड़ल्ले से बिक रहे हैं।

यह तो मुझे नहीं मालूम कि साहब के वाणी-वचनों से उनका आत्मविकास हुआ कि नहीं परन्तु यह निश्चित है कि अर्थ विकास बहुत तेजी से हो रहा है। साहब कहते हैं-

माया महाठगिनी हम जानी।
तिरगुन फाँस लिये कर डोले, बोले मधुरी बानी।।

जब साहब ये वचन कह रहे हैं तो कितने आत्म विश्वास से कह रहे हैं और जब इसपद को हम गाते हैं तो ये बात कितनी खोखली मालूम पड़ती है। जब हमने जान लिया कि माया महाठगिनी है तो फिर उसके चक्कर में कैसे पड़े हैं ? स्कूल में मैने एक कहानी पढ़ी थी। एक जंगल में शिकारियों का बड़ा आतंक था। रोज शिकारी जंगल में आकर जाल फैलाते थे, प्रतिदिन सैकड़ों पक्षियों को जाल में फँसाकर शहर में बेच देते थे। जंगल के पक्षी बड़े आतंकित हो गये।

उन्होंने आपस में बहुत विचार विमर्श किया कि इन शिकारियों से कैसे बचा जाय ? उन्हें कोई युक्ति नहीं सूझी तो एक बुजुर्ग पक्षी ने सुझाया, हमारे जंगल में एक महात्मा जी रहते हैं। क्यों न हम उसकी शरण में चलें ? वे हमें कोई उपाय बतलायेंगे। जंगल के सारे पक्षी महात्मा जी के पास चले गये। महात्मा जी ने उनकी बातें सुनी फिर कहा-ध्यान से मेरी बात सुनो। और जो मैं तुमसे कह रहा हूँ, उसे गाँठ बाँध लो। जी महाराज सारे पक्षी बिल्कुल सावधान हो गये। महात्मा जी ने पाठ पढ़ाया, शिकारी जंगल में आता है, जाल फैलाता है, दाने डालता है, हमें सावधान रहना है, उसके जाल में नहीं फँसना है। सारे पक्षी दोहराते हैं। एक बार, दो बार, तीन बार, दस बार, पचास बार जब तक पक्षियों को कंठस्थ नहीं हो गया, तब तक महात्मा जी ने यह पाठ उन्हें पढ़ाया। जब सारे पक्षियों को यह पाठ याद हो गया, तब महात्मा जी ने कहा-जाओ अब निर्भय होकर जंगल में विचरण करो। अब तुम्हें शिकारियों से कोई भय नहीं है। परन्तु दूसरे ही दिन जब महात्मा जी अपनी कुटिया के सामने बैठे थे, शिकारी उनके सामने से गुजरते हैं। सैकड़ों पक्षी उसके जाल में फँसे थे और फँसे हुये बोल रहे थे शिकारी जंगल में आता है, जाल फैलाता है, दाने डालता है, हमें सावधान रहना है, उसके जाल में नहीं फँसना है। महात्मा जी ने अपना माथा ठोक लिया कि ऐसे मूर्खों को उपदेश देना भी व्यर्थ है। साहब कह रहे हैं-

ठगिनी क्या नैना झमकावे, तोरे हाथ कबीर न आवे।

साहब सा यह आत्म विश्वास हमारे भीतर नहीं है। पूर्वी शैली में एक भजन है-

घुमाय गयी रे नैन वाली नजरिया, घुमाय गयी रे।
ब्रह्मा को मार गयी, विष्णु को मार गयी, शंकर का जटवा हिलाय गयी रे।
ज्ञानी को मार गयी, ध्यानी को मार गयी, जोगी का जोग भुलाय गयी रे।
कर्मी को मार गयी, धर्मी को मार गयी, ज्ञानी का ज्ञान भुलाय गयी रे।

और अन्त में साहब कहते हैं-

कहत कबीर सुनो भाई साधो, संतन को देख के लजाय गयी रे।

माया तो सन्तों से ही लजाती है, बाकियों को तो कौड़ी के मोल खड़े-खड़े बेच देती है, बिकने वाले को पता भी नहीं चलता है। समाज में होशियार बने फिरते हैं, परन्तु सब माया के हाट में बिके हुए हैं, कोई नहीं बचा है। साहब कह रहे हैं-

माया महाठगिनी हम जानी।
तिरगुन फाँस लिये कर डोले, बोले मधुरी बानी।
केशव के कमला होय बैठी, शिव के भवन भवानी।

पंडा के मूरत होय बैठी, तीरथ हूँ में पानी।
जोगी के जोगन होय बैठी, राजा के घर रानी।
कहत कबीर सुनो भाई साधू, यह सब अकथ कहानी।।

अब जिसने तिरगुन को ही फाँस लिया, उससे बड़ा ठग और कौन हो सकता है? बोले मधुरी बानी उसके मधुर रूप और बोल से ही तो लोग फँसते हैं। इस संसार में ठग जितना मीठा बोलता है, उतनी मीठी बोली और कोई नहीं बोलता होगा ? मीठी बोली न बोले तो लोग कैसे उसके जाल में फँसेंगे ? भले ही साहब कहते हैं-

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय।।

और

कागा किसका धन हरै, कोयल किसको देय।
मीठी बोली बोलकर, जब अपना कर लेय।।

कोयल सिर्फ मीठी बोली बोलकर जग को अपना बना लेती है। बेचारे कौये ने किसका क्या बिगाड़ा है ? परन्तु उसके काँव-काँव करते ही हम उसे भगा देते हैं, लेकिन कोयल कभी घर में आम की डाली पर आकर बैठ जाये और कुहु-कुहु की रट लगाये तो हम कितने आनन्दित हो जाते हैं। मीठी बोली के सम्बन्ध में मुझे एक कहानी याद आ गयी, एक बार एक कोयल और कौये में दोस्ती हो गयी, वैसे तो कभी होती नहीं। यह प्रकृति का अद्‌भुत खेल है। कोयल कभी घोंसला नहीं बनाती है, जब मादा कोयल को अण्डे देने होते हैं, तो किसी कौये के घोसले में अण्डा दे देती है। कौआ उसे पकाता है और जब बच्चे काले-काले निकलते हैं तो कौआ सोचता है ये मेरा ही बच्चा है और उसको खिलाता, पिलाता पालता पोसता है, उड़ना सिखाता है। उसका पूरा पालन-पोषण करता है, फिर भी आगे चलकर कभी कोयल और कौये में दोस्ती नहीं होती, लेकिन एक बार ऐसी अनहोनी हो गयी, दोनों में दोस्ती हो गयी। दोनों साथ-साथ खाते पीते थे, आकाश में उड़ते थे। कुछ दिनों के बाद उनके बीच एक समस्या खड़ी हो गई वे दोनों साथ-साथ जहाँ भी जाते कोयल को तो हर जगह सम्मान मिलता, पर कौये को हर जगह अपमानित होना पड़ता था। लोग उसे भगा देते थे, बहुत दिन तक बेचारे ने सहा, परन्तु जब नहीं सहा गया तो एक दिन वहाँ से भागने लगा। कोयल सोचने लगी कि क्या बात है ? यह मेरा मित्र है, कभी बिना बताये कहीं भी नहीं जाता, लेकिन आज चुपचाप कहाँ भागे जा रहा है।

कोयल उसका पीछा करती है किसी तरह पकड़कर पूछती है, क्या बात है ? कहाँ जा रहे हो? कुछ नहीं बस यूँ ही। कुछ तो बात है जरूर। क्यों मुझे छोड़कर भागे जा रहे हो? नहीं, बस यूँ ही। दिल पर आया। पर तुम जा कहाँ रहे हो? यूँ ही विदेश जा रहा हूँ। क्यों विदेश जा रहे हो? यहाँ लोग मेरी कद्र नहीं करते। यहाँ मेरा कोई सम्मान नहीं है, इसी से दुखी होकर विदेश जा रहा हूँ। कोयल बोलती है, बस इतनी-सी बात पर विदेश जा रहे हो। तुम्हारा सब सम्मान करते हैं, तुम्हें सब पसन्द करते हैं। हॉलाकि हम दोनों का रंग काला है, दोनों दिखने में एक जैसे हैं, लेकिन तुम्हें इतना सम्मान मिलता है मुझे लोग दुत्कार देते हैं, मेरा बड़ा अपमान होता है, इसलिये दुखी होकर, विदेश जा रहा हूँ। तो कोयल ने कहा, मित्र इतनी-सी बात के लिये विदेश जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। बस तुम अपनी बोली जरा सुधार लो। अगर तुम भी मीठी बोली बोलना सीख जाओ तो जैसे मुझे हर जगह सम्मान मिलता है, तुम्हें भी मिलेगा।

वाणी ऐसी बोलिये, सुख उपजे चहुँ ओर।
वशीकरण यह मंत्र है, तब दे वचन कठोर।।

किसी को अपने वश में करना है, तो कठोर वचन बोलना छोड़ दो। मीठी बोली बोलो, वह आपके वंश में हो जायेगा और ठग लोगों ने यह विद्या बखूबी सीख रखी है। इस संसार की सबसे बड़ी ठगिनी माया है। साहब की तरह उनके पदों को अक्षरश: हम भी गाते हैं, लेकिन उनके और हमारे कहने में कितना अन्तर है ? आज से 600 वर्ष पहले सदगुरु इतना कुछ कह कर भी सही सलामत रहे, तो इसका सिर्फ एक ही कारण था, कि इनके अन्दर सत्य की शक्ति थी जिसके आधार पर ही उन्होंने संसार के पाखंड का जीवन पर्यंत न सिर्फ सामना किया बल्कि उन पर प्रहार किया। अपनी वाणियों की तलवार से सदगुरु कबीर साहब मानव समाज में फैली हुई बुराइयों की जड़ को काटते थे। उनके शस्त्र उनकी वाणियाँ थीं।

मनुष्य जन्म में आकर हमें सुलझना है, परन्तु दिन-ब-दिन और उलझते चले जा रहे हैं। एक से बढ़कर एक विकट समस्यायें रोज पैदा कर रहे हैं जिसमें सबसे बड़ी समस्या तो जनसंख्या की है। हम अपनी संख्या तो बढ़ा लेंगे धरती को कैसे बढ़ायेंगे? अपने लिये दो वक्त की रोटी नहीं जुटा पा रहे, पर 10-10 बच्चे पैदा कर रहे हैं, उनको कहाँ से खिलायेंगे ? कहाँ से कपड़े पहनायेंगे ? उनको कहाँ रखेंगे ? कैसे उनका पालन-पोषण करेंगे ? दूसरों के लिये न सही, कम से कम अपने लिये तो सोचो। जीने के लिये सारे साधन चाहिये, रहने को मकान चाहिये, काम चाहिए, भोजन चाहिए लेकिन कहाँ से मिलेगा ? पर्यावरण के अलावा हमारे पास कुछ भी नहीं है, तो क्या उसका दोहन करेंगे ? पर्यावरण उजड़ता जा रहा है, जिससे हमें जीवन मिल रहा है, उसी को हम समाप्त किये जा रहे हैं। यदि कोई आदमी जिस डाल पर बैठा हो उसी पर कुल्हाड़ी चलाये तो आप उसे मूर्ख कहोगे क्योंकि डाल कटने पर खुद गिरकर वह अपने को ही नुकसान पहुँचायेगा। पर्यावरण से ही हमें जीवन मिला है और इसी से हमारा पोषण हो रहा है परन्तु हम उसे ही नष्ट किये जा रहे हैं, कितने मूर्ख हैं हम ? हमने सब कुछ प्रदूषित कर रखा है। जीवन के तीन आधार है-भोजन, पानी और हवा बाकी चीजों के बिना आदमी जी सकता है, मकान न हो तो कपड़े न हो तो जी सकता है। कपड़े तो हमने ही बनाये हैं और अपनी असभ्यता के कारण बनाये हैं, फिर भले ही कहें कि ये हमारी सभ्यता है।

जहाँ जितनी ज्यादा असभ्यता है वहाँ उतने ही ज्यादा कपड़े हैं, हर अंग को छिपाना पड़ता है। यहाँ मेरे विचार कुछ अलग हैं। लोग कहते हैं जहाँ कम कपड़े पहने जाते हैं, वे लोग बड़े असभ्य हैं, पर ऐसा नहीं है। दूसरे कई देशों में कम कपड़े पहने जाते हैं लेकिन वहाँ के लोग एक दूसरे के शरीर को वासना की दृष्टि से नहीं देखते हैं। ज्यादा से ज्यादा कपड़ो से अपने शरीर को ढँकने की आवश्यकता वही होती है, जहाँ सबसे ज्यादा असभ्यता हो। किसी सुन्दर स्त्री का जरा-सा भी अंग नजर आ गया तो भूखे भेड़िये की तरह लोग घूरना शुरू कर देते हैं। उसे अपने नख से सिख तक पूरा अंग छुपाकर रखना पड़ता है। तो मानव जीवन के भोजन, पानी और हवा बगैर असम्भव है लेकिन तीनों को ही हमने प्रदूषित करदिया है। अनाज उगाते हैं, खेती करते हैं और पारम्परिक गोबर खाद को भूलकर उसमें जमकर रासायनिक खाद डालते हैं।

नई पीढ़ी के किसान तो गोबर खाद के बारे में जानते भी नहीं होंगे वे अनाज में जमकर रासायनिक खाद डालते हैं तो उसे मारने के लिये फिर कीटनाशक दवाइयाँ डालते हैं। यदि अनाज में, खाने पीने की साग-सब्जियों में इतनी दवाईयाँ डालते हैं, तो उस जहर का प्रभाव कहाँ जायेगा। उसी अनाज को हम खाते हैं तो उसका दुष्प्रभाव हमारे शरीर पर होता है। नई-नई बीमारियाँ लग रही है लोगों को पहले के 50-60 साल पुराने लोग जिन बीमारियों का नाम भी नहीं सुने थे, इस तरह की नई-नई बीमारियाँ सामने आ रही है।

जीवन का दूसरा आधार पानी है। हम बे-वजह पानी बहाते हैं, पानी की कीमत नहीं समझते जबकि सैकड़ों साल पहले लोग पानी की कीमत समझ गये थे। विचारक रहीम कहते हैं-

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गयेन ऊबरे, मोती मानुष चून।।

उसका चिन्तन कितना व्यापक था, सैकड़ों साल पहले जब पानी की कोई समस्या नहीं थी तब उसने यह बात कह दी और उसी पानी के लिये आज हम त्राहि-त्राहि कर रहे हैं आप गुजरात वालों से पूछो जैसे सुबह पेपर देने के लिये पेपरवाला आता है वैसे ही पीने का पानी देने के लिये पानी वाला भी आता है। पीने का पानी नहीं है। किसी के घर में दो लीटर, किसी के घर में पाँच लीटर, किसी के घर में दस लीटर रोज का पानी बंधा हुआ है, जैसे हमारा रोज का दूध बंधा होता है। आज पीने का पानी नहीं है, नहाना-दोना तो दूर की बात है। जल संकट में तो घिरे ही हुये हैं, जल को प्रदूषित भी बहुत कर दिया हमने कितने कल कारखाने लगा दिये हैं जिनसे जो जहरीले रासायनिक तत्व और पदार्थ निकलते हैं, उनको कहाँ ले जाकर छोड़े ? तो सबसे बढ़िया उपाय सुझता हैकि नदी में जाकर छोड़ दें। बड़े-बड़े शहरों जैसे बाम्बे, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास आदि महानगरों में जनसंख्या करोड़ों में पहुँच गयी है। इतने लोग रहते हैं, हर घर से गन्दा पानी बह रहा है। रोज करोड़ों लोग मल-मूत्र कर रहे हैं, सब बहता है गटर में अब उसको कहाँ ले जाकर छोड़ें ? नदियों में छोड़ा जा रहा है। कल कारखानों के जहरीले रसायन भी नदियों में छोड़े जा रहे हैं। अनाज तो जहरीला हो ही गया, पीने का पानी भी जहरीला हो गया और तीसरा आधार हवा है मोटर गाड़ियों और कल कारखानों के धुयें से हवा भी दूषित हो गयी, हवा में भी जहर तैरने लग गया। वैज्ञानिक लोग कहते हैं कि बढ़ते प्रदूषण की वजह से हमारे पृथ्वी के वायुमंडल में उपस्थित ओजोन की पर्त नष्ट होती जा रही है। ओजोन एक गैस है, जो सूर्य की अल्टा वायलेट किरणों (पराबैगनी किरणों) जो बड़ी घातक होती है को छानती है या सीधे सरल शब्दों में बात करें तो सूर्य की जो गर्मी है, उसे कई गुना छान कर हम तक पहुँचाती है। उसके बाद भी यह धूप हमें इतना जलाती है कि जेठ के महीने में एक मिनट धूप में खड़े नहीं हो सकते। लेकिन वायु प्रदूषण से वह गैस नष्ट होती जा रही है, जिससे गर्मी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है और वैज्ञानिक कह रहे हैं कि इस स्थिति में ध्रुवीय प्रदेशों में जो बर्फ जमी हुई है, वह अब पिघलने लगी है इससे समुद्र का जल स्तर पढ़ेगा। यहाँ तक वैज्ञानिकों ने भविष्यवाणी करदी है कि आज से 40-50 वर्ष के बाद मुंबई शहर का बहुत बड़ा हिस्सा समुद्र के अन्दर चला जायेगा और आस्ट्रेलिया के सिडनी या पर्थ शहर के बारे में तो कहते हैं कि 30-40 साल में आधा शहर समुद्र के अन्दर चला जायेगा। आप सबने भूगोल में पढ़ा है कि इस पृथ्वी का तीन हिस्सा जल है और एक हिस्सा थल है जिसके अन्तर्गत ध्रुवीय प्रदेश का बर्फीला हिस्सा भी है। अगर वह पिघल जाये तो एक चौथाई हिस्सा जो थल है वह भी पूरा पानी के अन्दर चला जायेगा। हजारों हजार साल पहले सन्तों ने कहा है कि एक दिन ऐसा होगा जब यह धरती जलमग्न हो जायेगी, चारों तरफ जल ही जल हो जायेगा, सब डूब जायेगा। तब पढ़े-लिखे लोग इसे कोरी कल्पना कहा करते थे लेकिन अब वैज्ञानिक और वही पढ़े लिखे लोग ही इस बात को प्रमाणित कर रहे हैं।

इस प्रकार हम खुद अपने हाथ से अपना जीवन समाप्त कर रहे हैं। पता नहीं कब हमें अपने खुद के हित की बात समझ में आयेगी ? कब हम अपने हित चिंतकों की ओर सुध करेंगे, कब उनकी बातों को समझने का प्रयास करेंगे ?

●●

कबीर साहब के अनमोल दोहे

प्रस्तुतकर्ता : **महंत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

आगरा (उ. प्र.)

जाका गुरु है आँधरा, चेला कहा कराय ।

अंधे अंधा ठेलिया, दोनों कूप पराय ।।

Jaka guru hei andhara, chela kaha karay |

Andhe andha theliya, donon koop paray ||

जिसका गुरु अंधा अर्थात् अज्ञानी है तो उसका शिष्य भी वैसा ही असहाय होगा। अंधा गुरु अपने अंधे शिष्य को ठेलते हुए दोनों विषय-वासना के अँधेरे कुएँ में गिर जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं। अर्थात् एक अज्ञानी गुरु अपने शिष्य का अज्ञान दूर नहीं कर सकता।

What is that helpless disciple whoes preceptor (guru) is blind due to ignorance of true path ? When a blind guru leads his blind disciple both are dumped into the well of desire and lust and meet their bad end. It means an ignorant preceptor (guru) can not remove the ignorance of his pupil.

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान ।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।।

Jati na poochho sadhu ki, poochha lijiye gyan |

Mol karo talavar ka, pada rahan do myan ||

साधू-संतों से कभी शरीर सम्बन्धी जाति नहीं पूछनी चाहिए, उनकी पहचान सिर्फ ज्ञान से करनी चाहिए। खरीदते समय केवल तलवार का मोल-भाव किया जाता है, उसके म्यॉन (खोल) का नहीं।

Do not ask the caste, creed and colour of a saint but assess him on the basis of his knowledge only. When a sword is purchased, the bargaining on the price of sword is done ignoring the price of its scabbard.

जिन ढूँढा तिन पाइया, गहरे पानी पैठि ।

मैं बौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठि ।।

Jin dhundha tin paeya, gahare panee paithi |

D. K. Sahu

Mein bauri dooban dari, rahi kinare baithi ||

जिसने ज्ञान रूपी सागर की गहराई में उतरकर खोज की उसे परमात्मा रूपी अनमोल रत्न की प्राप्ति हुई। जो मूर्ख डूबने के डर से किनारे पर ही बैठा रह गया उसे परमतत्व की प्राप्ति नहीं हुई।

Those who dived into the deep water of the ocean of knowledge (meditation), only they have got the invaluable jewels of God. But those foolish who feared from drowing, sitting on the bank, could not find the supermost element.

जुआ, चोरी, मुखबरी, ब्याज, घूंस पर नारि ।

जो चाहो दीदार को, ऐती वस्तु निवारि ।।

Juaa, chori mukhabari, byaja ghoons par nari |

Jo chaho deedar ko, eiti vastu nivari ||

जुआ खेलना, चोरी करना, मुखबरी करना, ब्याज लेना, घूँस खाना और परस्त्री गमन आदि अवगुण करना पाप है। यदि परमात्मा का दर्शन करना चाहते हो तो इन बुरी आदतों का परित्याग करना पड़ेगा।

Continuous indulgence in gambling, theft, false witnessing, debts, bribe and adultery are considered to be too sinful activities. If you want to realize the supreme element God, leave all these bad habits.

ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आगि ।

तेरा साईं तुझ में, जागि सके तो जागि।।

Jyon til mahin tel hai, jyon chakamak main aagi |

Tera saeen tujha main, jaagi sake to jagi ||

जैसे तिल में तेल विद्यमान रहता है तथा चकमक पत्थर में आग रहती है परन्तु प्रयोग में लाने के पश्चात् ही दिखाई देते हैं। उसी प्रकार परमात्मा आपके भीतर विराजमान है। अज्ञान रूपी नींद से जाग जाने के पश्चात् ही साईं दिखाई देता है।

As there is oil in the sesamum and as the fire in the flint but it is seen only after action taken. In the same way your Lord exists in you indeed. If you awake from the sleep of ignorance by dint, then you will be able to see your master God.

जो मन निर्मल होय

प्रवचन : सोनिया माता साहिबा, दामाखेड़ा

जैसा कि आप सबको ज्ञात है वर्तमान समय में धर्म और आध्यात्म के क्षेत्र में सभी, धर्म सभी, सम्प्रदाय, सभी संत, ऋषि मुनि सभी ग्रंथ वेद किस एक बात पर एकमत है ? ऐसा कौन-सा विचार है जिसे सभी एक रूप में स्वीकार करते हैं, सभी उससे सहमत है? यह आत्मा उस परमात्मा का अंश है। उसकी मुक्ति परमात्मा में मिल जाने में ही है। उसका उद्धार इसी में है कि यह आत्मा उस परमात्मा में लीन हो जाये। तभी इसकी मुक्ति संभव है। और परमात्मा को पाने का मार्ग सिर्फ एक है- मन का निर्मलीकरण।

मन को निर्मल कर, मन को पावन कर, मन को शीतल करके ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। यही एक मार्ग है जिसे सब लोग एकमत होकर स्वीकार करते हैं। सदगुरु कबीर साहब ने हमें मन के विषय में हमें बहुत विस्तार से समझाया है।

सदगुरु कबीर साहब का व्यक्तित्व तेजस्वी क्रांतिकारी है। उनके एक-एक शब्द क्रांति के बीज है। अंगार के समान है। जिसे सुनकर हमारे हृदय में जो मलिनता है वह दूर हो जाये।

सांचा शब्द कबीर का सुनकर लागे आग। अज्ञानी तो जल मरे, ज्ञानी जाये जाग।।

इस संसार में अनेकों संत महापुरुष हुए, परन्तु कबीर साहब के समान कोई नहीं हुआ। क्योंकि सदगुरु कबीर होने का तात्पर्य है, मन में, हृदय में सांच की ऐसी आग होना कि सबके मन की मलिनता एक पल में जल जाये, दूर हो जाये। आज यह समाज विषमता, अज्ञानता, घोर पाखण्ड की मलिनता से व्याप्त है। पूरे समाज में अनेकों प्रकार का भ्रष्टाचार, अत्याचार, पाखण्ड फैला हुआ है जिसकी निवृत्ति सदगुरु कबीर साहब के वाणी वचनों द्वारा ही संभव है। क्योंकि विचार करें यह समाज इन बुराईयों के इन पालने में सो रहा है और किसी को जगाने के लिये पालने में सोते बच्चे को जगाने के लिये लोरी की आवश्यकता नहीं होती है। लोरी सुनायेंगे तो पालने में सोया बच्चा और गहरी नींद में सो जायगा। लेकिन उठाना है तो उसे झकझोर कर, आवाज देकर उठायेंगे, उठो उठने का समय हो गया।

सदगुरु कबीर साहब का क्रांति के अंगार के समान उनके वाणी वचनों को सुनाना है। जिसे सुनकर यह समाज एक क्षण में उठकर खड़ा हो जाये, जाग जाये। सदगुरु कबीर साहब के वाणी वचनों में ऐसी क्रांति है, जिसमें कोई भी भ्रांति नहीं है। बल्कि मन को निर्मल कर देने वाली इस जीवन को संवार देने वाली परम शांति है। तो क्रांति और शांति का अदभुत समन्वय सदगुरु कबीर साहब के वाणी वचनों में पाया जाता है। ऐसा कहीं नहीं पाया जाता, कहीं नहीं देखा जा सकता। जो इस बाह्य संसार को जीत लेता है उसे वीर कहते हैं और जो इस अंदर की दुनिया को जो अंतर का समाज है, उसे जीत लेता है उसे परमवीर, महावीर कहते हैं। लेकिन जो मन और बुद्धि के साथ-साथ इस संसार में फैली माया को जीत ले, मृत्यु को जीत ले, काल को जीत ले यहाँ तक कि स्वयं को स्वयं से जीत ले ऐसे सर्व विजेता को कबीर कहते हैं। धनी धर्मदास साहब सदगुरु कबीर साहब की स्तुति करते हुए कहते हैं-

गुरु दीनबंधु कृपाल साहेब, सकल मति के भूप हो।
तुम ज्ञान रूप अखण्ड पूरण, आदि ब्रह्म स्वरूप हो।।

साक्षात ब्रह्म के स्वरूप हो सकल मति के भूप हो। हम संध्या पाठ करते हैं तो पढ़ते हैं-

D. K. Sahu

सतयुग त्रेता, द्वापर बीता, रमता, तीता परपीरम्।
कलयुग कीता सबको जीता, परम पुनीता कब्बीरम्।।

अर्थात सदगुरु कबीर साहब सर्व विजेता तो हैं ही परम पुनीता भी है। उनका मन इतना निर्मल, इतना पावन, किसी प्रकार के विषय विकार से इतना अछूता है। सदगुरु कबीर साहब के पीछे-पीछे परमात्मा घूमते फिरते हैं।

कबीर मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर। पीछे-पीछे हरि फिरै, कहत कबीर कबीर।।

ऐसा मन निर्मल करना है, ऐसा मन पावन करना है। इस संसार में अनेकों देवी-देवताओं ने जन्म लिया, अनेकों महापुरुषों ने जन्म लिया लेकिन सभी इस काया रूपी चदरिया को मैला कर गये। लेकिन सदगुरु कबीर साहब एक ऐसे हैं जिन्होंने **ज्यों के त्यों धर दीनी चदरिया।**

जेहि चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ि के मैली किन्हीं चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ि, ज्यों के त्यों धर दीनी चदरिया।।

ऐसे सदगुरु कबीर साहब का निर्मल पावन व्यक्तित्व है, मन है। मलूकदास जी सदगुरु कबीर साहब के विषय में कहते हैं-

चार दाग से न्यारे सदगुरु न्यारे, अजरा अमरा शरीर।
दास मलूक सलोक कहत है, खोजो खसम कबीर।।

ऐसे सदगुरु कबीर साहब को ढूंढों जो चारों दागों से न्यारे हैं। चार दाग कौन से है? (1) गर्भाग्नि का दाग। जो इस संसार में आता है उसे माँ के गर्भ से जन्म लेना पड़ता है। (2) जठराग्नि का दाग। इस संसार में आये हैं तो भूख प्यास शांत करनी पड़ेगी। (3) कामाग्नि का दाग। प्रत्येक मनुष्य के अंदर कामाग्नि, कामना, वासना होती है। (4) चिताग्नि का दाग। जो इस संसार में जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी निश्चित है।

सदगुरु कबीर साहब इन चारों दागों से न्यारे हैं। क्योंकि वे साक्षात सत्यपुरुष परमात्मा है। उनके अंश है और वे साक्षात सत्यपुरुष परमात्मा निरंतर हम पर अपनी अनुकम्पा, अपना आशीर्वाद, अपना प्रेम बरसा रहे हैं। लेने में कमी है तो हममें है। इस संसार में वे एक है जो हमें इस संसार सागर से मुक्त कर सकते हैं। लेकिन हम अनेकों के चक्कर में पड़े हैं। तो सर्वप्रथम हमें उन एक को स्वीकार करना है। और उनके प्रति अपने भाव को जगायें। तब हमारा भाव, हमारी भक्ति उनसे जुड़ेगी, उनकी एक दया दृष्टि हम पर पड़ जाये तो हमारा उद्धार हो जाये। वे मुख से कुछ नहीं कहते सिर्फ एक दया दृष्टि फेर दे तो हमें सब कुछ प्राप्त हो जायेगा। लेकिन अगर हम एक को नहीं पकड़ते हैं अगर अनपे भाव को नहीं जगाते हैं तो वे तो सदगुरु है अपनी प्रेम और भक्ति, अपनी, अनुकम्पा अपना आशीर्वाद हम पर बरसाते रहेंगे।

हम अनंत समय से, अनेकों सालों से, कई पीढ़ियों से दामाखेड़ा आ रहे हैं। हमारे पूर्वज आते रहे हैं। लेकिन क्या हमने अपने अंदर कोई परिवर्तन पाया, महसूस किया, अनुभव किया क्योंकि उस एक को नहीं पकड़ पा रहे हैं। उनकी भक्ति में अपने आप को समर्पित नहीं कर पा रहे हैं और मन इस तरह से इस माया में समाया है कि तीनों लोक संशय में पड़ा है। कि किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करें।

मन माया तो एक है, माया मनहिं समाय। तीनों लोक संशय पड़ा, काहि कहूं समझाय।।

मन और माया एक में खो गये हैं। इस संसार में व्याप्त हो गये हैं, ऐसे रम गये हैं कि हम भी उनमें रम गये हैं। उनमें व्याप्त हो गये हैं। उनसे अलग नहीं हो पा रहे हैं। तुलसीदास जी कहते हैं-

गो गोचर जहँ लग मन जाई, सब कुछ मिथ्या जानहू भाई।

इस संसार में जहाँ तक मन लगता है वह सब कुछ माया है। यह मन सत्य कार्य को हमें करने नहीं देता है। हर बात पर संकल्प विकल्प की परिस्थिति उत्पन्न करता है। सदगुरु द्वारा कहे वचनों पर तर्क करता है, द्वन्द की स्थिति पैदा करता है। कभी भी एकमत नहीं होने देता, एक कार्य नहीं करने देता। जैसे हमने घड़ी देखी है उसमें एक पेंडुलम होता है वह इधर से उधर डोलता रहता है। इसी प्रकार यह मन है। इसमें विचारों का प्रवाह इसी प्रकार चलते रहता है। अभी हाँ है, एक क्षण पश्चात न हो जायेगा। संकल्प विकल्प की स्थिति पैदा करना इसका कार्य है। जब तक पेंडुलम चलता है घड़ी चलती है तथा बंद हो जाये तो घड़ी बंद हो जाती है। इसी प्रकार यह मन है। जब तक इसमें विचारों का प्रवाह चलता है तब तक यह मन संसार से लगा रहेगा। लेकिन जब मन में विचारों का प्रवाह बंद हो जायेगा, तो सहज समाधि लग जायेगी। मन निर्मल हो जायेगा और मन निर्मल होगा तो **सहजे साहब पाइया, जे मन निर्मल होय।** उस सत्यपुरुष परमात्मा की प्राप्ति हो जायेगी। देखिए, सभी वेद, धर्म इसी बात पर एकमत है कि मन को निर्मल कर परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। आप वेद उठाकर देख लें, वेद में कुल एक लाख बीस हजार मंत्र है। लेकिन उनमें से आश्चर्य की बात है कि मात्र सौ मंत्र परमात्मा के विषय में है, शेष सभी मंत्र इस मन के विषय में है। आप कोई भी ग्रंथ उठाकर देख लें सब में एक ही बात लिखी है।

Man is made in the image of the creature and for God like deads.

मनुष्य इस परमात्मा का प्रतिबिम्ब है और उसकी भलाई इसी में है कि इसे ईश्वर तुल्य कार्य करना चाहिए। यह आत्मा उस परमात्मा का अंश है। तो यह ईश्वर तुल्य कार्य तभी करेगा जब अपने हृदय में उस परमात्मा को विद्यमान कर पायेगा। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसके पास मन होता है। जिसे मनन करने की शक्ति दी गई है। जिसे चिंतन करने का अधिकार है। अन्य कोई जीव के पास मन नहीं होता मनन चिंतन करने की क्षमता नहीं होती। हम मनन् करके अपने मन को सकारात्मक मार्ग पर ले जाकर इसका उद्धार कर सकते हैं। इसे परमात्मा से मिला सकते हैं और नकारात्मक मार्ग पर चलकर इसे पतन के मार्ग पर ले जा सकते हैं।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। पार ब्रह्म को पाइये, मन ही की परतीत।।

जैसे एक घर है उस घर के छत पर हमें जाना है। जाने के लिये और छत से उतरने के लिये एक ही सीढ़ी होती है। ऐसा नहीं है कि चढ़ने के लिये दूसरी और उतरने के लिये दूसरी सीढ़ी हो। एक ही सीढ़ी होती है उस पर चढ़कर हम छत पर पहुँच जाते हैं और उसी पर से उतरकर हम नीचे आ जाते हैं। उसी प्रकार मन ही एक ऐसी सीढ़ी है जिस पर चढ़कर हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। और जिससे उतरकर हम इस संसार सागर में फंस सकते हैं, अपना अहित कर सकते हैं। अपना नुकसान कर सकते हैं।

मन को शुद्ध करके हमें परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है। जैसे किसी व्यक्ति के बारे में हम जानना चाहते हैं तो उसका भला हम तभी कर सकते हैं, जब हम उसके बारे में जाने कि वह है कौन ? कहाँ रहता है? उसके परिवार में कौन-कौन है, वह क्या है ? तो पहले हम उस व्यक्ति को जानेंगे तभी उसकी मदद करेंगे। वैसे ही हम पहले मन को जाने। मन का स्वरूप क्या है ? यह शरीर तीन प्रकार का होता है—

1. स्थूल शरीर, 2. सूक्ष्म शरीर, 3. कारण शरीर।

स्थूल शरीर अर्थात् जो हमें दिखाई देता है। हम चल रहे हैं फिर रहे हैं, किसी से बातें कर रहे हैं, जो दिखाई दे रहा है जो परिलक्षित हो रहा है वह स्थूल शरीर है और सूक्ष्म एवं कारण शरीर जो दिखाई नहीं देता। सूक्ष्म शरीर अर्थात अन्त:करण। अन्त:करण चार प्रकार की वस्तुओं से बना है। मन बुद्धि, चित्त और अहंकार। इन चार वस्तुओं से बना है मन। इसमें मन प्रधान है क्योंकि मन इंद्रियों को काम करवाता है। इंद्रियों से कार्य सम्पादित

करवाता है। जब यह स्थूल शरीर मृत हो जाता है तब यह सूक्ष्म शरीर, यह अन्त:करण मृत नहीं होता और अगले जन्म में साथ-साथ चला जाता है। मन और बुद्धि द्वारा किये गये कार्य चित्त को प्रभावित करते हैं। चित्त में संस्कार के रूप में चित हो जाते हैं। ध्यान से समझने का प्रयास करें, कहने का तात्पर्य यह है कि स्थूल शरीर तो मृत हो गया। इसके द्वारा किये गये सब कार्य समाप्त हो गये। लेकिन मन और बुद्धि से किये गये जो कार्य है जो संस्कार के रूप में चित्त में संचित है वे हमारे अगले जनम को निर्धारित करते हैं। हमारी मुक्ति को निर्धारित करते हैं। उस मन द्वारा किये गये कार्य से हमारा उद्धार, हमारी मुक्ति या हमारा अगला जनम संभव है। यह मन है। एक सुन्दर सा रूपक है-

यदि यह जीव, यह आत्मा रथ है। रथ में पाँच ज्ञानेन्द्रिय एवं पाँच कर्मेन्द्रिय ये दस घोड़े जुते हुए है। विवेक इसका सारथी है और मन इसकी लगाम है जिस पर गुरु ज्ञान रूपी विवेक का अंकुश लगना जरूरी है। आवश्यक है। गुरु ज्ञान रूपी अंकुश लगाना जरूरी है। गुरु ज्ञान रूपी अंकुश नहीं लगा तो यह मन रूपी लगाम बेकाबू हो जायेगा और यह आत्मा रूपी रथ कभी भी अपने उद्देश्य अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकेगा और पतनोन्मुखी हो जायेगा। पतन के मार्ग में चला जायेगा, इसका उद्धार कभी सम्भव नहीं हो पायेगा। हम जब घर बनवाते हैं तो लाइट फिटिंग का काम करवाते हैं। लाइट लगवाते हैं तो एक बोर्ड में बल्व का स्विच लगवाया जिसको जलाने से बल्व जलेगा। ट्यूब लाइट का बटन लगवाया। फैन का स्वीच लगवाया। अलग-अलग स्विच लगवाते हैं लेकिन अगर मेन स्विच न लगवाये तो क्या होगा ? मेन स्विच को बड़ी सुरक्षित जगह में लगवाया जाता है। ध्यान देकर लगवाया जाता है क्योंकि उसके ठीक रहने पर ही सारे स्विच काम करते हैं। उसी प्रकार का मन इस शरीर का इस आत्मा का जीव का स्विच है जिसे सम्हालकर रखना है।

मन सबसे खतरनाक है। यह शरीर खतरनाक नहीं। कोई जीव खतरनाक नहीं होता, उससे हमें डरने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह जीव जो कार्य करता है यह हम नहीं कर रहें, यह हमारी इंद्रियाँ नहीं कर रही है, यह मन हमसे करवा रहा है। हम अपनी आँखों से कोई चीज देखते हैं, तो यह आँखें नहीं देख रही है यह मन हमसे देखने को कह रहा है, तो हम देख रहे हैं। हम कानों से किसी की बुराई सुन रहे हैं तो यह कान नहीं सुन रहा यह मन हमसे सुनने को कह रहा है, तो हम सुन रहे हैं। हाँ बहुत अच्छी चर्चा चल रही है सुनो, तो हम सुनते है। इसका एक साधारण सा उदाहरण है, जो सबके जीवन में आता है कि कभी हमें भूख लगी हो, हमारे सामने व्यंजनों से सजी एक थाली आ जाये तो सबसे पहले हम उसी बर्तन को उठायेंगे, जो हमारे मन को सर्वाधिक प्रिय होगी। हमारा हाथ अपने आप उस तरफ बढ़ जायेगा। तो यह मन हमारे शरीर का मेन स्विच है। तो इसे परमात्मा की भक्ति में लगाना है। सदगुरु के चरण-शरण में लगाना है तभी हमारा उद्धार संभव है। मन की कुछ विशेषताएँ होती है। मन बड़ा चंचल होता है। अगर हम देखें तो आकाश की ऊँचाई नापना एक बार आसान है। समुद्र की लहरों को गिनने को कहा जाय तो समुद्र की लहरें गिनना भी आसान है। लेकिन मन के बारे में कहा जाय तो कोई नहीं कर सकता। आज के आधुनिक वैज्ञानिकों ने शोध किया। मन के गति के विषय में तो पाया। मन की गति कितनी है ? बाइस लाख इकसठ हजार एक सौ इक्कीस किमी प्रति सेकण्ड यहाँ तक की सूर्य की किरणों को पृथ्वी पर आने में एक लाख इक्यासी हजार मील प्रति सेकण्ड लगता है। लेकिन यह मन एक सेकण्ड में बाइस लाख इकसठ हजार एक सौ इक्कीस किमी. प्रति सेकण्ड है। अर्थात् एक पल में सात समुन्दर पार कर जाता है। एक क्षण में हिमालय की चोटी पर पहुँच जाता है। बहुत तीव्रगामी है। अत्यधिक चंचल है यह मन। तो यह मन जो है विचारों का, कामनाओं का समुद्र है। विचारों का प्रवाह होता है। इसमें एक कामना की लहर इस समुद्र में गिरती

नहीं है कि दूसरी कामना उठ खड़ी होती है। इतना चंचल और तीव्रगामी है।

शरीर की प्यास को तृषा कहते हैं। शरीर को भूख प्यास लगती है उसे तृषा कहते हैं और मन की प्यास को तृष्णा कहते हैं। इस शरीर को प्यास लगती है तो हम पानी पी लेते हैं। तृषा शांत हो जाती है। लेकिन जब मन को प्यास लगती है, मन की तृष्णा जागती है तो उसके मामले में एकदम उल्टा होता है। मनवांछित वस्तु प्राप्त करने के बाद उसे और अधिक प्राप्त करने की इच्छा बढ़ती जाती है। आज एक रुपये मिले हैं, कल दस रुपया मिल जाये परसो सौ मिल जाये, हजार मिल जाये, लाख मिल जाये। यह तृष्णा कभी समाप्त ही नहीं होती। तो मन की यह जो आशा-तृष्णा है, यह बिन पेंदी के बर्तन जैसी है। बिन पेंदी का बर्तन ले लें। सुबह से लेकर रात तक पानी भरते रहें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा बर्तन खाली ही रहेगा। पेंदी ही नहीं है रुकेगा कहाँ से, तो वैसे ही यह मन है, यह बिना पेंदी का बर्तन है। मनुष्य समाप्त हो जाता है लेकिन यह आशा तृष्णा समाप्त नहीं होती है—

माया मुई न मन मुआ, मर-मर गया शरीर। आशा तृष्णा न मुई, कह गये साहब कबीर।।

मन की एक और विशेषता है कि इसे जिस कार्य के लिये मना किया जाय वही कार्य करेगा। जैसे-एक छोटा बच्चा है उसे कहा गया कि भई तुम उस डंडे को मत छूना उसमें करंट आता है। तो देखो, बच्चा थोड़ी देर तो उसका मन शांत नहीं होता जब तक वह वहाँ तक पहुँच न जाय। वैसे ही यह मन होता है। इसे जिस कार्य को करने के लिये मना किया जायेगा यह वही कार्य करेगा। जब तक कर नहीं लेगा शांत नहीं होगा। इसका उदाहरण हमें यह दिखता है, कि काफी लोग यह शिकायत लेकर आते हैं कि परमात्मा की भक्ति में मन नहीं लगता। सत्संग में मन नहीं परमात्मा में ध्यान नहीं लगता अनेकों लोग प्राय: यह शिकायत लेकर आते हैं कि परमात्मा की भक्ति में मन नहीं लगता। सत्संग में बैठते हैं तो नींद आती है, पूजा प्रार्थना करते हैं तो मन नहीं लगता। परमात्मा में ध्यान नहीं लगता। अनेकों लोग प्राय: यह शिकायत लेकर आते हैं। तो इसका कारण यह है कि इस मन को निषेध में बड़ा आनंद आता है। जिस कार्य को मना किया जायेगा वह कार्य करने में इसे बड़ा आनंद आता है। मन इस माया से लगा है संसारमुखी है यह मन इसलिये इसे निषेध में बड़ा आनंद आता है। परमात्मा की भक्ति करने बैठेगा लेकिन उसमें ध्यान नहीं लगेगा। सत्संग में बैठेगा दस मिनट हुआ पंद्रह मिनट हुआ, आधा घंटा हुआ उसके बाद नींद आने लगती है। लेकिन अगर किसी की निंदा करने बैठा दिया जाय, किसी बुराई करने के लिये बैठा दिया जाय तो सुबह से शाम हो जायेगी नींद का अता-पता नहीं रहेगा। बहुत नींद आती है। उस समय जब परमात्मा की भक्ति करनी हो। लेकिन किसी की बुराई करनी हो तो नींद नहीं आयेगी दुगुने जोश के साथ बैठ जायेंगे उसकी बुराई करने ऊपर से नीचे तक उसकी बुराई करने पूरा ऊपर से नीचे तक उसी बुराई करके रख देंगे, कोई सिरा नहीं छोड़ेंगे। लेकिन जब हम परमात्मा का ध्यान करने बैठते हैं परमात्मा के सामने बैठते हैं। उसकी उपासना करने तो जितनी जगह में हम बैठे हैं। जिसके सामने हम बैठे हैं और जो करने हम बैठे हैं, उसको छोड़ के पूरे संसार की चीजें हमें याद आ जाती है। बस जहाँ बैठे हैं वह ही याद नहीं आता। जो कर रहे हैं वह याद नहीं रहता लेकिन जो कुछ किया और जो कुछ करना है वह सब याद आ जाता है और उसी व्यक्ति को दस हजार, पचास हजार एक लाख का बंडल दे दो कि भई ये मैंने तुम्हें दिया। देख लो गिनकर पर्याप्त है, बराबर है कि नहीं। फिर देखो वह जब गिनने बैठेगा तो उसके सामने में अगर बैंड बाजा भी बजवा दो तो एक गिनती भी इधर की उधर नहीं होगी। इतना ध्यान परमात्मा में लगाये तब तो।

कबीरा यह मन लालची, समुझै नहीं गँवार। राम भजन को आलसी, खावन को होशियार।।

खाने में होशियार और राम भजन में आलसी, आलस आता है। अगर हम साधना के द्वारा कई दिन तक

अपने मन को कड़ा कर लें, अगर हम मन को कहें कि इस माया से दूर चल, परमात्मा के पास चल। साधना के द्वारा एक दिन दो दिन एक हफ्ते महीने साल तक ले भी गये, तो जरा सी ढील देते नहीं है कि यह मन तुरन्त माया के पास लौट आता है।

कबीरा मन पंछी भया, बहुत उड़ा आकाश। ऊपर ही ते गिर पड़ा, मन माया के पास।।

तुरन्त माया के पास पहुँच जाता है क्योंकि मन और पानी एक समान होता है। दोनों की प्रवृत्ति एक समान होती है। पानी नीचे की ढाल जहाँ गड्ढा होगा पानी उधर ही चला जायेगा। अधोमुखी हो जाता है वैसे ही यह मन है जहाँ यह संसार के विषय विकार भोग, रूपी जो नीचे की तरफ ढाल की तरफ एक गढ्ढा दिखेगा इस मन को थोड़ी सी ढील दो कि यह मन उधर ही दौड़ पड़ता है, यह मन का स्वभाव है। तो इस मन को कैसे समझाये? सदगुरु कबीर साहब का एक सुन्दर-सा पद इस मन के विषय में है। जिसे आप सबसे कहना चाहूँगी-

मन रे थारे कहे चलूँ तो सीधे नरक ले जाये। मन तोहि किस विधि समझाऊँ।
सोना होय सोहाग मंगाऊ, बंकनाल रस लाऊँ। ज्ञान शब्द की फूंक चलाऊँ, पानी कर पिघलाऊँ।।
घोड़ा होय लगाम मंगाऊँ, ऊपर जीन कसाऊँ। होय सवार तेरे पर बैठूँ, चाबुक देई चलाऊँ।
हाथी होय जंजीर गढ़ाऊँ, चारों पैर बंधाऊँ। होय महावत सिर पर बैठूँ, अंकुश लेइ चलाऊँ।
लोहा होय ऐरण मंगाऊँ, ऊपर धुवन धुवाऊँ। धुआँ की घनघोर मचाऊँ, यन्तर तार खिचाऊँ।।
ज्ञान चाहिए ज्ञान सिखाऊँ, सत्य की राह बताऊँ। कहे कबीर सुनो भाई साधो, अमरापुर पहुँचाऊँ।।

कितना सुन्दर कबीर साहब का पद है यह—**मन रे थारे कहे चलूँ तो सीधे नरक ले जाये।** मन माया के आधीन है और माया कहाँ है ? इस संसार में फैली हुई है यह माया। तो अगर हम मन के कहे अनुसार चलें तो ये हमें माया के पीछे ले जाते हुए, इस संसार के विषय विकारों इस संसार के भोगों में लगा देगा और हमारा उद्धार कदापि संभव नहीं हो पायेगा। हमारा कल्याण कदापि नहीं होगा। इस मन का कार्य है यह-

कोटि कर्म पल में करे, यह मन विषया स्वाद। गुरु वचन माने नहिं, जनम गँवाया बाद।।

यह मन का कार्य है यह करोड़ों कर्म एक पल में कर डालता है। ये सभी कार्य विषय स्वाद रूपी कर्म होते हैं। सांसारिक कर्म होते हैं। परमात्मा तक पहुँचाने वाले कर्म कोई नहीं होते, क्योंकि यह गुरु के वचन मानता ही नहीं है और मनुष्य के जीवन को व्यर्थ कर देता है। इसका कार्य है यह। एक बहुत सुन्दर सा कथानक है। एक बार एक शिकारी था। वह जंगल में शिकार करने गया। घूमते-घूमते रास्ता भटक गया। उस जंगल में रास्ता भटक गया वह। बहुत देर तक ढूँढ़ा लेकिन उसे रास्ता नहीं मिला। थक-हारकर वह एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। वह वृक्ष कोई साधारण वृक्ष नहीं था। वह कल्पवृक्ष था और कल्पवृक्ष के बारे में यह मान्यता है कि उस वृक्ष के नीचे बैठकर अगर कुछ मांगा जाय तो पूर्ण हो जाता है। वह शिकारी उस पेड़ के नीचे बैठा भूखा था। मन में यह विचार आया कि काश! मेरे सामने बहुत सुन्दर भोजन लगी हुई एक थाली आ जाती। यह बात उसके मन में आयी कि व्यंजनों से सजी हुई एक सुन्दर सी थाली उसके सामने आ गई। भूखा था इसलिए उस भोजन पर टूट पड़ा। खाते-खाते मन है, मन का कार्य अलग चल रहा है। मन सोचना शुरू कर दिया कि मैं इस निरय जंगल में बैठा हूँ। यहाँ कहाँ से यह सुन्दर भोजन से लगी हुई थाली मेरे सामने आ गयी। कहीं इस पेड़ पर भूत-प्रेत तो नहीं रहता ? कहीं वो सब मेरे सामने आ गये तो मेरा क्या होगा ? अभी आकर नाचने लगे मेरे सामने तो मैं क्या करूँगा और ये सोचना था उसके मन का, कि अनेकों भूत-प्रेत आ करके उसके सामने नाचने लग गये। अब भूत देखा तो डर गया, कांप गया। अरे बाप रे! इतने सारे भूत-प्रेत मेरे सामने नाच रहे हैं। अवश्य ही यह थाली इन्हीं लोगों ने भेजी होगी। पता

D. K. Sahu

नहीं ये क्या करना चाहते हैं। ये सब कहीं मुझे मार तो नहीं डालेंगे ? समाप्त तो नहीं कर देंगे मुझे, कहीं यही तो मकसद नहीं है, इनका ? यह सोचना था उसके मन का कि भूत उस पर जुट गये और मारते-मारते समाप्त कर दिया। तो यह मन का कार्य है सारे उटपटांग कार्य सारे गलत कार्य इस मन को ही आते हैं क्योंकि पतनोन्मुखी है यह मन। यह मन हमें पतन के मार्ग पर ही ले जाता है। मन के बारे में, मन की स्थिति के बारे में विचार करें तो एक उदाहरण ऐसा है कि यह मन जैसा कि हम किसी सर्प को देखें। उसके मुँह में फंसा हुआ एक मेढक है। बस कभी भी काल का ग्रास बन सकता है वह मेढक। लेकिन अगर उस मेढक को सामने में कोई कीड़ा नजर आ गया तो तुरन्त उसे खाने के लिये दौड़ जायेगा। अपनी मृत्यु भूल जायेगा। वैसा ही यह मन है। वैसे ही हम है। हम संसार सागर में पड़े हैं। मालूम है हमें कि हमारी गति क्या होनी है। हमारा उद्धार किसमें है। फिर भी हम इन भोगों में संलिप्त होकर पड़े हैं। क्योंकि मन हमसे यह करने को कह रहा है। मन के कहे अनुसार हमें नहीं चलना है। वरना कभी हमारा उद्धार संभव नहीं है।

मन के मतै न चालिये, मन के मते अनेक। जो मन पर असवार हो, सो साधु कोई एक।।

जो इस मन पर सवार हो सके, ऐसा साधू कोई एक ही होगा और यह मन जिस प्रकार करोड़ों कर्म करता है, एक पल में । कभी परमात्मा की भक्ति में अनेकों रंग दिखाता है।

मन लोभी मन लालची, मन चंचल मन चोर। मन के मते न चालिये, पलक पलक मन मोर।।

अलग-अलग रंग दिखाने वाला यह मन है। कभी परमात्मा के रंग में लगा देगा और ऐसे लगेगा जैसे हम परमात्मा के परम साधक बन गये। परम भक्त बन गये। अब बस परमात्मा के अतिरिक्त हमें कुछ नहीं चाहिए। और वही कुछ समय पश्चात् हम इन विषयों के इस विषय विकारों की तरफ किस प्रकार लग जाते हैं हमें स्वयं भी ध्यान नहीं रहता। अनेकों रंग दिखाता है यह मन।

मन के बहुतक रंग है, छिन-छिन मध्ये होय। एक ही रंग में रंग रहे, ऐसा बिरला कोय।।

तो हमें ऐसा रंग रंगना है कि परमात्मा के लाल रंग में रंग जाना है। **लाली मेरे लाल की,** परमात्मा की प्रेम रूपी भक्ति रूपी लाल रंग को स्वीकार कर लेना है। वरना यह मन अनेकों रंग दिखाते रहेगा। और अनेकों रंग में हम रंगते रहेंगे। आज लाल रंग, कल काला रंग, परसो पीला रंग, हरा रंग, अनकों रंग में रंगते रहेंगे। हमे ज्ञात भी नहीं होगा कि हम किस रंग में रंगे हैं। तो परमात्मा की प्रेम रूपी लाल रंग में रंग जाये। तभी हमारा उद्धार संभव है। **मन तोहे काहे विधि समझाऊँ।** अगर यह मन स्थूल होता तो आसानी से वश में किया जा सकता था। पकड़ा जा सकता था, काबू में किया जा सकता था। लेकिन यह मन चंचल तो है ही सूक्ष्म भी है। आसानी से वश में नहीं आने वाला है। सदगुरु कबीर साहब अनेक रूपकों के माध्यम से समझाते हैं कि हम मन को किस प्रकार से अपने वश में करें, परमात्मा में लगाये।

सोना होय सोहाग मंगाऊँ, बंकनाल रस लाऊँ। ज्ञान शब्द की फूँक चलाऊँ, पानी कर पिघलाऊँ ।।

अगर यह मन सोना होता तो इसे सोहाग से, सोहागा जो होता है, सोहाग से बंकनाल रस बंकनाल रस अर्थात ब्रह्म रंध्र से निकला अमृत रस से जोड़ देता । अगर यह मन सोना होता, तो इसे ज्ञान की अग्नि में तपाकर ब्रह्म रस से धोकर सोने के जैसा चमका देता। लेकिन यह मन सोना नहीं। इसलिए इसे किस प्रकार से वश में करूँ। कैसे समझाऊँ ? आगे कहते हैं सदगुरु कबीर साहब—

घोड़ा होय लगाम मंगाऊँ, ऊपर जीन कसाऊँ। होय सवार तेरे पर बैठूँ, चाबुक देई चलाऊँ।।

अगर यह मन घोड़ा होता तो इस पर विवेक रूपी लगाम लगाता। अभ्यास रूपी गद्दी इसकी पीठ पर

बिछाता। साधना रूपी सवारी करता और गुरु के ज्ञान रूपी चाबुक से इसे कभी भी गलत मार्ग में न जाने देता। एक सुन्दर-सा कथानक है-एक बार एक राजा था। उस राजा के पास एक विचित्र बकरा था। उस बकरे में यह विशेष बात थी कि उसको दिन भर कितना भी खिलाया जाय, उसकी भूख-प्यास शांत ही नहीं होती। दिन भर उस बकरे को खिलाया पिलाया जाता था। जैसे ही कुछ डाला जाय उसके सामने वह फिर खाने लगता था। उसकी भूख प्यास शांत ही नहीं होती थी। तो राजा के मन में एक विचार आया और राजा ने अपने राज्य में घोषणा करवा दी कि जो भी इस बकरे की भूख-प्यास शांत कर देगा तो मैं उसे आधा राज्य ईनाम में दे दूँगा। लेकिन परीक्षण में स्वयं करूँगा कि इस बकरे की भूख-प्यास शांत हुई है कि नहीं। अनेकों लोगों ने जब यह सुना। अरे वाह एक बकरे की भूख प्यास शांत करने के लिये हमें आधा राज्य मिलेगा। बढ़िया चीज है चलो भई चलते हैं। बड़ा आसान कार्य है। अनेकों लोग पहुँचते और बकरे को ले जाते। दिन भर खिलाते पिलाते और शाम को लेकर आते तो राजा थोड़ी-सी घास उस बकरे के सामने डाल देते और वह बकरा उसे खाने लग जाता। लोग हताश निराश लौटने लगे कि राजा कोई पागल थोड़ी है कि बकरे के पेट भरने के बदले में आधा राज्य दे दे। जरूर यह कोई अदभूत बकरा है। लगता है स्वर्गलोक से आया है। तो वापस लौटने लगे। उस शहर में, उस राज्य में एक संत रहते थे। जब उन्होंने यह बात सुनी तो वे राजा के पास आये और बोले महाराज मैं इसकी भूख प्यास शांत कर दूँगा। राजा बोले बहुत लोगों ने कोशिश किया आप भी करके देख लो संत बोले मैं अवश्य इसकी भूख प्यास शांत कर दूँगा। बिल्कुल शांत हो जायेगा यह बकरा। फिर ले गये उस बकरे को। संत जगल में और ले जाकर के एक तरफ जहाँ बहुत सारी हरी-हरी घास थी वहाँ छोड़ दिया। घास देखकर बकरे के मुंह में पानी आ गया। दौड़ गया और जैसे ही खाने को हुआ खाने के लिये उसने जैसे ही अपना मुँह बढ़ाया। संत ने एक मोटा डंडा लिया और उसके मुंह पर एक लगाया और फिर दिन भर ऐसा ही चलता रहा। जैसे ही बकरा उस घास की तरफ मुंह मारता संत जी एक डंडे से प्रहार करते। फिर बकरे के मन में यह बात बैठ गई कि घास खाने पर मार पड़ती है और उसने घास की तरफ देखना ही छोड़ दिया। उसके मन में यह धारणा बैठ गई कि घास खाऊँगा तो मार पड़ेगी उसने घास की तरफ देखना भी छोड़ दिया और भूख भी कमजोर हो गया लेकिन घास की तरफ देखना ही छोड़ दिया शाम हुई तो संत जी उस बकरे को लेकर राजा के पास आये और बोले महाराज अब इस बकरे की भूख-प्यास शांत हो गई। राजा बोले-मैं परीक्षण करके देखता हूँ इसकी भूख प्यास शांत हुई है या नहीं ? राजा ने कुछ हरी घास उठाई और उसके सामने डाल दी। बकरे के दिमाग में तो बैठा था कि घास खाऊँगा तो मार पड़ेगी। तो उसने घास की तरफ देखा ही नहीं। राजा बोले वाह, बड़ी अच्छी बात है इसकी भूख-प्यास शांत हो गई और राजा ने उन्हें जिस प्रकार से उन्होंने कहा था कि मैं आधा राज्य दे दूँगा उन संत को आधा राज्य प्रदान किया।

तो इस कहानी का अर्थ है ? इसके मूल में क्या निहित है इसका क्या तात्पर्य है यह जो राजा है, यह जीव है। आत्मा है और जो वह बकरा था राजा का वह, यह जीव का मन है जो घास है वह यह संसार रूपी विषय विकार है। संत सदगुरु है। और डंडा सदगुरु द्वारा दिया गया ज्ञान है। तो जैसे ही यह मन रूपी बकरा विषय विकार रूपी घास को खाने के लिये मुंह बढ़ाये तो गुरु के ज्ञान रूपी डंडे से प्रहार करो। कदापि नहीं जायेगा कहीं भी और सदगुरु के चरणों में लगा रहेगा। तो यह मन का स्वभाव है इसी प्रकार आगे रूपक देते हुए सदगुरु कबीर साहब कहते हैं-

हाथी होय जंजीर गढ़ाऊ, चारों पैर बंधाऊँ। होय महावत सिर पर बैठूँ, अंकुश लेई चलाऊँ।।

अगर यह मन हाथी होता, हाथी का क्या स्वभाव होता है ? हाथी बहुत मतवाला होता है। वह जब अपने धुन में चलता है। जंगल में जब चलता है, तो अनेकों वृक्ष टूट जाते हैं। अनेकों जीव उसके पैरों के नीचे आकर मर

जाते हैं। लेकिन वह अपने धुन में मतवाला होकर चलता है। कुछ नहीं देखता। वैसे ही यह मन है। जब यह विषय विकार रूपी जंगल में चलता है तो मनुष्य के जीवन को नष्ट कर देता है और आप हाथी को ध्यान से देखें गौर से देखे तो उसका कान हमेशा हिलते रहता है, वैसे ही यह मन है। हमेशा हिलते रहेगा, इधर से उधर चंचल रहता है तो अगर मन हाथी होता तो जिस प्रकार हाथी के पैरों में जंजीर बंधवाकर महावत उसके सिर पर बैठकर अंकुश दे देकर उसे सही मार्ग पर ले चलता है और हाथी जैसे ही गलत मार्ग पर चलता है। उसे अंकुश से सीधा मार्ग पर लाया जाता है। सही मार्ग पर लाया जाता है वैसे ही अगर यह मन हाथी होता, तो इस पर ज्ञान से ज्ञान रूपी जंजीर से इसके चारों पैर बाँध देता और विवेक रूपी महावत को सिर पर बैठाकर गुरु ज्ञान की भक्ति से उत्पन्न विवेक को इस हाथी के सिर पर बिठाकर मन के सिर पर बिठाकर गुरु ज्ञान की अंकुश से गलत मार्ग पर जाने न देता। संसार की तरफ प्रवृत्त न होने देता। संसार की तरफ उन्मुख न होने देता। सदगुरु कबीर साहब मन के विषय में बताते हैं कि जिस प्रकार यह मन है हाथी है, उसी प्रकार इस मन को भी जिस प्रकार हाथी को काबू में किया जाता है, वश में किया जाता है। उसी प्रकार इस मन को वश में करो और ज्यों-ज्यों चले पीठ दे। जैसे ही यह पीठ देकर चलने की कोशिश करे अंकुश देकर, इसे अंकुश मार मारकर सीधे मार्ग पर ले आओ।

मैं मनता मन मार रे, घटहि मांहि फेर । ज्यों ज्यों चाले पीठ दे, अंकुश दे देकर फेर।।

इस मन को हाथी के समान वश में कर लेता लेकिन यह मन हाथी नहीं है। तो इसे किसी प्रकार समझाऊँ?

लोहा होय ऐरण मंगाऊँ, ऊपर धुवन धुवाऊँ। धुँआ की घनघोर मचाऊँ, यन्तर तार खिचाऊँ।।

अगर यह मन लोहा होता तो जिस प्रकार लोहे की ऐरण, जिस पर लोहे के तार को गरम करके पीटा जाता है, उसे ऐरण कहते हैं। तो अगर यह मन लोहा होता तो इसे गुरु ज्ञान रूपी अग्नि में खूब तपाता, लाल करता, इतना लाल करता कि धुँआ हो जाता और सुरति की अहरण पर पीट-पीट कर इसे मंत्र रूपी तार में परिवर्तित कर देता। परमात्मा से एक तार कर देता। परमात्मा से जोड़ देता। अंतत: सदगुरु कबीर साहब कहते हैं-

ज्ञान चाहिए ज्ञान सिखाऊँ, सत्य की राह बताऊँ।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, अमरापुर पहुँचाऊँ।।

ज्ञान चाहिए ज्ञान सिखाऊँ इस मन पर अज्ञानता का आवरण होता है। यह मन अज्ञानता से ढंका हुआ है और इस मन से इस ज्ञानता को हटाने का एक मात्र उपाय सदगुरु के पास है। सदगुरु ही ऐसे हैं जो इस मन से अज्ञानता को, इस मलिनता को दूर कर सकते हैं। क्योंकि-

साँचे गुरु के पक्ष में, दीजे मन ठहराय। चंचल से निश्चल भया, नहिं आवय नहिं जाय।।

सच्चे गुरु के पास वह सामर्थ्य होती है, वह शक्ति होती है कि वह इस मन को, मन की मलीनता को, गंदगी को इसकी दुस्प्रवृत्ति को दूर कर सके और साचा गुरु कौन ? जिन्होंने मन माया पर विजय प्राप्त कर ली हो। सत्य को साक्षात्कार कर लिया हो-

गुरु सोई जो सत्य लखावै। आन गुरु कोई काम न आवै।।

सच्चे गुरु वे हैं जो सत्यनाम लखावै। अन्य गुरु कोई काम आने वाले नहीं है क्योंकि अन्य गुरु कौन होते हैं जगतगुरु जो इस जगत तक ही रह जाते हैं। संसारी गुरु जगतगुरु। बड़ा सुन्दर और सटीक नाम दिया गया है ऐसे गुरु को क्योंकि वह जगत तक ही रहते हैं आगे साथ नहीं देते।

गुरु लोभी शिष्य लालची, दोनों खेलै दाँव। दोनों डूबे मझधार में, चढ़ पाथर की नाँव।।

गुरु लोभी है तो शिष्य लालची है और गुरु शिष्य की मर्यादा भी तो उसी प्रकार होगी। जैसा गुरु होगा वैसा

शिष्य होगा। यदि गुरु लोभी है तो शिष्य लालची ही होगा। ऐसे लोगों का कभी उद्धार नहीं हो सकता। अगर वे सदगुरु के प्रेम रूपी, परमात्मा के भक्ति रूपी लकड़ी की नाव पर चढ़ते हैं तो मझधार से पार हो जाये। लेकिन लालच और लोभ रूपी पत्थर की नाव पर चढ़ेंगे तो पत्थर की नाव तो डूबेगी ही। कभी उद्धार तो होने वाला नहीं है। ऐसे जगतगुरुओं का एक मात्र उद्देश्य होता है। और वह उद्देश्य क्या होता है? **पैसा लाकर यहाँ पर धर चाहे डूब चाहे मर।** उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं होता शिष्य के उद्धार से उनका कोई मतलब नहीं होता है। कोई संबंध नहीं होता है। बस एक ही उद्देश्य होता है पैसा लाकर यहाँ पर रख दें बाकी तू जान तेरा काम जाने। **लोभी गुरु लालची चेला, करे नरक में ठेलम ठेला।** और ऐसे लोभी गुरु और लालची चेला कहाँ जायेंगे ? नरक में जायेंगे उद्धार तो होने वाला नहीं है। क्योंकि उद्धार करने का सामर्थ्य सिर्फ सदगुरु के पास होता है। सदगुरु कौन है सदगुरु कबीर साहब। और सदगुरु कबीर साहब, परमात्मा को प्राप्त करने के विषय में मन को निर्मल करने के विषय में क्या कहते हैं ? प्रश्न और उत्तर का कितना अदभुत समन्वय है। साहब कहते हैं-

कबीर मन मैला हुआ, यामे विषय विकार। यह मन कैसे धोइए, संतो करो विचार।।

यह मन मतवाला हो गया। इसमें विषय विकार के इतने दाग लगे हैं कि इसे किस प्रकार छुड़ाएँ, कैसे धोएँ? और इसका उत्तर देते हुए भी सदगुरु कहते हैं-

गुरु धोबी शिष्य कापड़ा, साबुन सिरजन हार। सुरति शिला पर धोइए, निकसय रंग अपार।।

जब हम कपड़ा धोने जाते हैं तो कपड़ा धोने का भी अपना एक तरीका होता है। सबसे पहले कपड़े का दाग छुड़ाना है, तो उसे पानी में अच्छी तरह डुबोकर रखते हैं। जब तक पानी से उसे भिगाएँगे नहीं तब तक उस पर कितना भी साबुन रगड़ते रहो दाग निकलने वाला नहीं। नहीं निकलता है, क्योंकि पानी से कपड़े को गीला करना पड़ता है। उसी तरह से गुरु के ज्ञान रूपी साबुन को अगर सूखे कपड़े पर अर्थात बिना भाव के बिना भक्ति के बिना प्रेम के मन पर रगड़ोगे, चलाओगे तो यह ज्ञान सिर्फ बुद्धि तक रह जाएगा। हृदय तक नहीं उतर सकता। तो मन को सर्वप्रथम गुरु के ज्ञान रूपी, गुरु के प्रेम रूपी, जल में अच्छी तरह से भीगने दो और फिर उस पर गुरु के, ज्ञान रूपी साबुन को लगाओ। देखो तो मन कितना शुद्ध, कितना निर्मल, कितना चमकदार बन जायेगा। कि परमात्मा हमें अपने चरण-शरण में ले लेंगे। लेकिन मन को मलिन बनाना हमारा कार्य है। और हम इससे निकलना भी नहीं चाहते हैं। कितने दुर्भाग्य की बात है।

अब उदाहरण देखो कि अगर कोई जीव है वो किसी भ्रमवश कुएँ में गिर जाये तो जब तक उसके जान में जान रहती है, जब तक वह जीवित है, वह उस कुएँ से निकलने का प्रयास करते रहता है। लेकिन हम इस संसार रूपी गर्त में संसार रूपी कुएँ में पड़े हैं, विषय विकार के जल में डूब रहे हैं। लेकिन इतने आश्चर्य बात है कि हम निकलने का प्रयास भी नहीं करते। यह सोचते भी नहीं, यह विचार भी नहीं करते कि हम कौन है? कहाँ से आये हैं ? क्या हैं ? हमारा उद्धार किस प्रकार होग?

कबीर सोया क्या करे, काहे न उठ के जाग। जाहि के संग बिछुड़ा, ताहि के संग लाग।।

सोये हो उठो, जागो, देखो हम क्या है ? हम कहाँ से आये हैं ? हमारा इस संसार में क्या उद्देश्य है ? हमारी मुक्ति किस प्रकार होगी ? हम जिससे बिछड़ गये हैं, उसके संग लग जाये। तो इस मोह निद्रा से जगानेको श्रेय सदगुरु कबीर साहब को है। सदगुरु कबीर साहब ही हमें इस मोह निद्रा से जगाने वाले हैं और जगाने के लिये सदगुरु कबीर साहब एक शब्द में कहते हैं और इसी शब्द के साथ मैं अपनी बात समाप्त करूँगी। इस संसार में सार क्या है ? पुन: उसी बात पर आये। इस संसार में ऐसा सार क्या है कि हम उस परमात्मा को प्राप्त कर लें।

एक शब्द में सब कहा, सबहिं अर्थ विचार। भजिए नि:क्षर निजनाम को, तजिए विषय विकार।।

●●

अनुराग सागर

-महंत हरिसिंह राठौर

गतांक से आगे...

ब्रह्मा जी को जगाने के लिये आद्या का गायत्री को युक्ति बताना

सोरठा - आद्या आयसु पाई, गायत्री तब ध्यान महँ ।
निजकर परसेउ जाय, ब्रह्मा तबहिं जागि है।।

गायत्री द्वारा अपनी माता अष्टांगी का ध्यान धरने पर, माया ने गायत्री को आज्ञा देते हुए कहा-हे गायत्री! तुम ब्रह्मा को छुओ, तब वह अवश्य जाग जायेगा।

चौपाई- गायत्री पुनि कीन्ही तैसी। माता युक्ति बताई जैसी ।।
गायत्री तब चित्त लगाई। चलण कमल कहँ परसेउ जाई।।

फिर गायत्री ने वैसा ही किया जैसा कि माता ने उसको उपाय बताया गायत्री ने उसके चरणों में चित्त लगाते हुए ब्रह्मा के चरणों को छू लिया ।

ब्रह्मा का जागकर गायत्री पर क्रोध करना

चौपाई- ब्रह्मा जागि ध्यान मन डोला। व्याकुल भयो वचन तब बोला ।।
कवल अहै पापिन अपराधी। काह छुड़ायहु मोर समाधी।
शाप देहूँ तो कहँ मैं आनी। पिता ध्यान मोहि खण्डयो आनी।।

गायत्री द्वारा ब्रह्मा के चरणों को हाथ लगाते ही ब्रह्मा जाग गए और उनका अपने पिता निरंजन के प्रति किया जाने वाला ध्यान भंग हो गया। तब वे बेचैन होकर गायत्री से बोले। तुम कौन हो ? तुमने मेरी समाधि क्यों तोड़ी मैं तुमको श्राप दूँगा क्योंकि तुमने मेरे पिता के प्रति किये जाने वाले ध्यान को भंग कर दिया है।

गायत्री वचन ब्रह्मा के प्रति

चौपाई- कवि गायत्री मोहि न पापा। बूझि लेहु तब देहहु शापा।।
कहौ तोहि सो साँची बाता। तोहि लेन पठयी तुव माता।।
चलहु वेगि जननी लावहु बारे। तुम बिन रचना को विस्तारे।।

गायत्री ब्रह्मा से कहती है कि मैंने कोई अपराध नहीं किया। मुझसे सारी बात जनकर फिर कोई श्राप देना। गायत्री ने कहा कि मैं तुमसे सत्य कहती हूँ कि तुम्हारी माता ने ही तुमको लेने के लिये मुझे भेजा है। तुम जल्दी चलो, तुम्हें तुम्हारी माता बुला रही है। हे ब्रह्मा! तुम्हारे बिना सृष्टि की रचना कैसे होगी तथा सृष्टि का विस्तार कैसे होगा ?

ब्रह्मा वचन गायत्री के प्रति

चौपाई- ब्रह्मा कहे कौन विधि जाऊँ। पिता दरश अजहुँ नहीं पाऊँ।।

ब्रह्मा ने गायत्री से कहा- हे गायत्री! मैं अब कैसे माता के सामने उपस्थित हो सकता हूँ ? अब तक मैंने अपने पिता के दर्शन ही नहीं किए।

गायत्री वचन ब्रह्मा के प्रति

चौपाई- गायत्री कहै दरशन पैहो। बेगि चलहु नहीं तो पछतैहो।।

D. K. Sahu

तब गायत्री ने ब्रह्मा को ताना देते हुए कहा–क्या तुम अपने पिता के दर्शन प्राप्त कर सकते हो ? कतई नहीं पा सकोगे। अगर अपना भला चाहते हो तो जल्दी माँ के पास चलो अन्यथा पछताओगे।

ब्रह्म का गायत्री को साक्षी देने के लिये कहना

चौपाई– ब्रह्म कहै देहु तुम साखी। परस्यो शीष देख मैं आखी।।
ऐसे कहो मातु समुझायी। तो तुम्हरे संग हम चली जायी।।

ब्रह्मा ने गायत्री से कहा–हे गायत्री! अगर तुम मेरी झूठी गवाही दे दो कि ब्रह्मा को निरंजन के श्री मुख के दर्शन मेरे सामने हुए हैं। तब तो मैं तुम्हारे साथ माता के पास चल सकता हूँ।

गायत्री वचन ब्रह्मा के प्रति

चौपाई– कहै गायत्री सुन श्रुति धारी। हम नहीं मिथ्या वचन उचारी ।।
जो मम स्वारथ पुरवहु जाई। तो हम मिथ्या कहब बनाई।।

तब गायत्री ने वेद विद्या धारण करने वाले ब्रह्मा से कहा–हे ब्रह्मा ! मैं वैसे झूठ बोलने वाली तो नहीं हूँ। परन्तु अगर तुम मेरी मन की इच्छा पूर्ण कर सकते हो तो मैं तुम्हारे कहे अनुसार झूठ बोल सकती हूँ।

ब्रह्मा वचन गायत्री के प्रति

चौपाई– कहे गायत्री देहु रति मोही। तो कह झूँठ जिताऊँ तोही।।

तब गायत्री ने ब्रह्मा से कहा–हे ब्रह्मा! यदि तुम मुझे रतिदान दो तो मैं झूठ बोल सकती हूँ।

सदगुरु कबीर वचन धर्मदास प्रति

चौपाई– गायत्री कहै है यह स्वारथ। जानि कहौं मैं पुनि परमारथ।।
सुनि ब्रह्मा चित करे विचारा। अब का यत्न करहुँ इहि बारा।।

कबीर साहब धर्मदास जी से कहते हैं कि गायत्री ने ब्रह्मा को अपने मतलब की बात कह दी और फिर झूठ बोलकर ब्रह्मा का भलाई करने को तैयार हुई। गायत्री द्वारा ऐसे वचन सुनने पर ब्रह्मा गहरे विचार में डूब गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए ?

छन्द– जो विमुख या कह करौं, अब तो नहीं बन आवई।
साखी तो यह देय नहीं, जननी मोहि लजावई।।
यहाँ नाहिं पिता पायो, भयो न एको काज हो।
पाप सोचत नहीं बने, अब करौ रति विधि साज हो।।

ब्रह्मा ने काफी विचार करने के बाद यह निर्णय लिया कि अगर गायत्री को निराश करता हूँ तो कार्य सिद्ध होने वाला नहीं है, इसको राजी किए बिना यह झूठी गवाही देने वाली नहीं है तथा इसके द्वारा झूठी गवाही दिये बिना मुझे माता के सामने शर्मिन्दा होना पड़ेगा कि शून्याकाश में आकर भी पिता के दर्शन प्राप्त नहीं हुए। मेरा एक भी मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ। अगर पाप सोचता हूँ तो काम नहीं बनेगा। अंत में ब्रह्मा ने गायत्री से रति करने का निर्णय लिया।

सोरठा– पिया भोग रति रंग, बिसर्‌यो सो मन दरश का।
दोऊ कहँ बढ़यो उमंग, छल मति पुनि प्रकाश की लै।।

तब ब्रह्मा और गायत्री रति में लीन हो गये तथा ब्रह्मा के मन में अपने पिता के दर्शन की जो कामना थी वह बिसर गई। ब्रह्मा और गायत्री कामवासना में लीन हो गए।

क्रमशः.....

स्वास्थ्य जगत

आँतों की कृमि
(Intestinal Worms)

डॉ. कविता वर्मा, दामाखेड़ा (छ.ग.)

परिचय—परजीवी कृमियों (Parasitic worm's) की मनुष्य की आँत में उपस्थिति को कृमि रूगणता (Helminthiasis) कहते हैं। यहाँ कृमियों से अभिप्राय वर्म्स (worms) से है।

सामान्य कारण—मीठे पदार्थ, शाक सब्जी, अपचय भोजन (Indigestion food) रसदार भोजन आदि कारणों से आँत में कीड़े उत्पन्न होते हैं।

मुख्य कारण—1. अस्वच्छता पेट के कीड़ों का सबसे प्रमुख कारण है। 2. बिना हाथ धोये भोजन करने से। 3. अत्यधिक मात्रा में तरल पदार्थ लेने से। 4. आटे और गुड़ से बने हुए खाद्य पदार्थों से। 5. जमीन पर गिरी हुई चीज उठाकर खाने से। 6. नाखून कुतरने की आदत से। 7. अधिक पका केला खाने से। 8. गुड़ का अधिक सेवन करने से।

मनुष्य की आँतों में 4 प्रकार के कृमि मिलते हैं—(1) गोल कृमि (Round worm), (2) सूत्री कृमि (Thread worm), (3) फीता कृमि (Tape worm), (4) अंकुश कृमि (Hook worm)

(1) गोल कृमि (Round worm)—चिकित्सा के क्षेत्र में गोल कृमि का नाम एस्केरिस लुम्बीकोइडस है। यह कृमि गोल आकृति का पारदर्शक श्वेत भूरे रंग का दोनों सिरों पर नुकीला होता है। नर कृमि 6-7 इंच और मादा कृमि 8-10 इंच लम्बा होता है। औसत लम्बाई 4-12 इंच तक होती है। यह केंचुआ जैसे लम्बा और पतला होता है। यह छोटी आँत में रहता है।

रोग के कारण—मधुर पदार्थ और हरी शाक-सब्जी का अधिक सेवन एवं अपच एवं रसदार भोजन करने से।

रोग के लक्षण—1. लार्वा के फेफड़ों में पहुंचने से कृमिजन्य, फुफ्फुस शोध, ज्वर तथा स्वर तंत्र सम्बन्धी लक्षण उत्पन्न होते हैं। 2. अपच पतले दस्त। 3. पित्ती उझलना (Drticaina) एवं एलर्जी होता है। 4. पेट में दर्द। 5. नींद न आना।

रोग का निदान—1. रक्त परिक्षण 10 प्रतिशत स्नोफीलिया मिलने पर, 2. बेरियम एक्स रे, 3. माइक्रोस्कोपी परीक्षण।

रोग की औषधी—1. टेबलेट मेबेडाजोल-1 गोली दिन में 2 बार 3 दिन तक। 2. एबेक्स (Abex) 2 वर्ष से छोटे बच्चे को आधा गोली। 3. एलनाजोल 400 mg की 1 गोली रात में 1 बार दूध के साथ ले। 4. Bandy Plus बैण्डी प्लस सीरप 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को केवल 5 ml रात में दे और 5 वर्ष से ऊपर के बच्चों को 10 मिली. रात में सोते समय दे।

(2) सूत्री कृमि (Threud worm)—इन कृमियों का वैज्ञानिक नाम एण्टीरोबियास, वर्मीकुलेसिस भी है। इस संक्रमण को एण्टीरोबिआसिस कहते हैं। सामान्य बोल-चाल की भाषा में चुन्ना या चनूना भी कहा जाता है। नर कृमि 2-5 मिमी. लंबी तथा मादा कृमि 8-13 मिमी. लम्बी होती है।

D. K. Sahu

कारण—1. बच्चों में अधिक और वयस्कों में कम मिलते हैं। 2. इन धागे जैसी कृमियों का निवास स्थान मलाशय और बड़ी आँत है। 3. अधिक मीठा खाने से।

लक्षण—1. इन कृमियों की गति रात के समय तीव्र होती है। 2. नींद खराब हो जाती है जो विशेष कर बच्चों में होती है। कभी-कभी बच्चे दाँत किटकिटाते हैं। 3. भूख की कमी (Loss of Appetite) 4. बुखार, 5. हाज्मा (Constipation) 6. उल्टी और दस्त, 7. पेट में दर्द।

सूत्र कृमि का निदान—1. गुदा पर बिजली के बल्व का प्रकाश डालने से ये कृमि खिंच कर बाहर आने लगते हैं। 2. वयस्क कृमि मल में उपस्थित मिलते हैं जिन्हें आँखो से देखा जा सकता है।

कृमि की औषधि—1. मबेडाजोल (Mebendazole) 100 mg की एक मात्र 1 सप्ताह बाद पुनः दोहरायें। 2. पिपराजीन साइट्रेट 65 mg/kg 7 दिन तक।

(3) फीता कृमि (Tape worm)—फीता कृमि आकार में चपटी होती है। टेप वर्म बहुत कम रोगियों में देखे जाते हैं। यह कृमि विशेषकर उन रोगियों में पाया जाता है जो गाय और सुअर का मास प्रयोग करते हैं या जो मांसाहारी है। यह कृमि रोगी की आँत में दीवार के अन्दर अपना सिर गाड़े रखता है और रक्त चूसा करता है। यह 35 फीट तक लम्बा हो सकता है।

लक्षण—1. शरीर भार में कमी, 2. भूख अधिक लगना, 3. पेट में दर्द, 4. पेट में गुड़गड़ाहट इसका विशेष लक्षण है जो सुनाई देता है।

रोग का निदान—1. टीनिया सेलियम के द्वारा मांसपेशियों तथा त्वचा पर स्थानीय लक्षण लगभग 3-7 वर्षों बाद दिखाई पड़ते हैं। इस समय त्वचा पर हाथ फेरने से माथे की भांति प्रतीत होतेहैं। मस्तिष्क में मृत सिस्ट जमा होते रहते हैं जिन्हें एक्सरे (X-Ray) द्वारा देखा जा सकता है। मांसपेशियों में मृत सिस्टों की गाँठे त्वचा के नीचे एक्सरे चित्रण में दिखाई देता है।

रोग की औषधि—1. रोगी को मीठा खिलाकर कुछ देर बाद कृमि नाशक औषधि देने से कृमि बाहरनिकल आते हैं। 2. संतुलित आहार, 3. Albendazole or pruziguanfel is the drug of first choice for tape worm infection. 4. अंकुश कृमि (Hook worm)—इसको एनसाइलोस्टीमा डयूडीनेल कहते हैं। इन कृमियों का रंग लाल होता है। अंकुश कृमि आंत के प्रथम भाग (Duodenum) में रहते हैं। रोगी का रक्त चूसकर उसको पीला बना देता है। नर कृमि प्रायः 1 सेमी तथा मादा कृमि 1.5 सेमी. लंबा होता है।

कारण—1. निरंतर रहने वाला कब्ज 2. मीठा पदार्थ , 3. कच्चे और सड़े फल का सेवन, 4. दूषित मांस खाने से।

लक्षण—1. शरीर पीला पड़ जाता है। 2. उल्टी, 3. Duodenal uken के समान लक्षण, 4. रक्त न्यूनता के कारण चेहरे पर भुस-भुसापन, 5. पेट का बढ़ना, 6. पतले-पतले दस्त।

रोग का निदान—मल परीक्षा (Stool Test) मल के 1 ग्राम में लगभग 5 हजार ओवा मिलते हैं।

रोग की औषधि—1. संतुलित आहार, 2. रक्त अल्पता के लिये आयरन दें। 3. पाइरेंटल (purental) 1 1mg /kg body wegiht दिन में 1 बार 3 दिन तक। बच्चों को रोज उनके वजन भार के अनुसार दिया जाना चाहिए।

नोट —किसी भी प्रकार का कृमि नाशक औषधि गर्भावस्था में प्रयोग न करें।

●●

ज्ञानवर्धक पहेली के उत्तर

(वर्ष 19, अंक 3)

प्रश्न 1. धनी धर्मदास साहेब के जीवन काल में गद्दीनसीन हुये बांधवीय नरेशों के नाम बताइये, जिन्होंने बांधवगढ़ में सदगुरु कबीर साहब का शिष्यत्व ग्रहण किया था ?

उत्तर— धनी धर्मदास साहेब के जीवन काल में दो बाँधवीय नरेश गद्दीनशीन हुए। राजा वीरसिंह बघेल वि.सं. 1524-1597 एवं उनके पुत्र राजा वीरभानु (वि.सं. 1543-1612) ने बांधवगढ़ में सदगुरु कबीर साहब का शिष्यत्व ग्रहण किया था। राजा वीरसिंह बघेल उर्फ राजा राम ने अपनी तीनों रानियों-सुकुमार देवी (इन्द्रमती), कुलपालिका देवी (रानी कमलावती) और मानिक मती सहित वि.सं. 1542 में सदगुरु कबीर साहब से दीक्षा ली। राजा वीरभानु उर्फ राजा रामसिंह ने अपनी महारानी राजमती के साथ सदगुरु कबीर साहब से दीक्षा मंत्र लिया। इन दोनों राजाओं के समय में बांधवगढ़ के प्रसिद्ध सेठ धर्मदास जी साहब थे जिनके पूर्वजों ने समय-समय पर आर्थिक सहायता देकर बांधवीय नरेशों की सहायता की थी। बांधवीय नरेशों का इतिहास-रीवा राज्य के इतिहास कबीर पंथी साहित्य तथा **द इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया** एवं **डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स ऑफ रायपुर** में उपलब्ध है।

प्रश्न 2. पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब ने सर्वप्रथम कौन-से ग्रन्थ की रचना की थी ?

उत्तर— पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब ने सर्वप्रथम **सद्गुरु कबीर ज्ञान पयोनिधि** नामक ग्रन्थ की रचना की। जिसका प्रथम संस्करण 1972 में प्रकाशित हुआ।

प्रश्न 3. गुरु बंकेजी साहेब की परम्परा में कितने वंश गुरु हुए ?

उत्तर— सदगुरु करुणामनय नाम साहब के शिष्य श्रेष्ठ कायस्थ कुलोत्पन्न पूरब दिशा के मालिक दरभंगा शहर में प्रकट गुरु बंकेजी साहेब की परम्परा में 27 वंशगुरु हुए—1. प्रेमनाम, 2. हुलास नाम, आनंद नाम, 4. विश्वास नाम, 5. हित नाम, 6. प्रीति नाम, 7. निरख नाम, 8. विवेक नाम, 9. सतनाम, 10. क्षमा नाम, 11. धैर्य नाम, 12. अनहद नाम, 13. शील नाम, 14. सन्तोष नाम, 15. सुमति नाम, 16. बुद्धि नाम, 17. भाव नाम, 18. भक्ति नाम, 19. दया नाम, 20. ज्ञान नाम, 21. कृपा नाम, 22. विचार नाम, 23. कर्तव्य नाम, 24. लेहूधर नाम, 25. भेद नाम, 26. मोक्ष नाम, 27. सुमन नाम।

प्रश्न 4. चलावा चौका आरती कौन-कौन सी लगन में सम्पन्न की जाती है ? पक्ष, तिथि, वार सहित समझाइये ?

उत्तर—चलावा चौका आरती किसी कबीर पंथी व्यक्ति के देहान्त होने पर की जाती है। यह चौका कृष्ण पक्ष में सूर्य की तिथि तथा वार देखकर किया जाता है। चलावा चौका आरती वंशगद्दी से पंजाधारी महन्तों (कड़िहार) द्वारा सम्पन्न किया जाता है किन्तु पंजाधारी महन्तों का चलावा चौका वंशाचार्य के हाथों सम्पन्न कराया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य सेवक-सती या साधू-सन्तों के चौके भी कराने वालों की इच्छानुसार वंशगुरु कर सकते हैं। चौका आरती में पक्ष, तिथि और वार का विशेष महत्व है। चलावा चौका दो लग्नों में-जैमुनि लग्न और जगपति लग्न में सम्पन्न किया जाता है।

1. जैमुनि लग्न—जब कृष्ण पक्ष हो तथा सूर्य की तिथियाँ हो अर्थात् प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावश्या हो। दिन सूर्य का हो अर्थात् शनिवार, रविवार, मंगलवार हो। दाहिना स्वर (सूर्य) चलता हो और उसमें पृथ्वी तत्व आ जावे तब इसे जैमुनि लग्न (उत्तम सूर्य लग्न) कहते हैं। यह लग्न चलावा चौका के लिये बहुत ही उपयुक्त है। सदगुरु कबीर साहब का वचन है—

चौपाई—मक्रहि उदय पक्ष अंधियारा, तिथि सनेह रवि तीनहि वारा।

काया उदय सूर्य है सारा, पृथ्वी तत्व होय असवारा।।
सोई लगन जैमुनि है नामा, बिगड़े हंस पहुँचे निज धामा।।

2. जगपति लग्न—जब कृष्ण पक्ष हो सूर्य की तिथियाँ अर्थात 1, 2, 3, 7, 8, 9,,13, 14, 15 अथवा अमावश्या का दिन हो, लेकिन दिन चन्द्र का हो तो जगपति लग्न कहलाती है।

चौपाई—चन्द्रवार सूरज तिथि होई, ताते जगपति कहिये सोई।।

प्रश्न 5. भजन पूरा करो—

उत्तर— प्रथम फाग बसंत पंचमी, सतगुरु मेहेर करो री।
अब पकड़ो छुटे नहिं कबहूँ, पियासों जाय मिलो री।।
प्रथम गुफा में बैठ के सजनी, नाभी आइ दई री।
दूजे बंद कंठ ले छेदो, सूखी नाल भई री।।
कर्म भर्म के बरुआ काटे, चेतन अगिन दई री।
दियो जराय कुबुध कलेश को, उड़ के आकाश गई री।।
चोवा चंदन अबीर अरगजा, केशर कीच भरो री।
धीरज ध्यान प्रेम कुमकुमा, रंग सतसुधि न रही री।।
आपहि खेल खेलारी साहब, आपहि ज्ञान गुनी री।
दिना चार माया को ख्यालै, खेलत आप धनी री।
इहँ उहाँ बाहिर भीतर सब में, जानै जान गुनी री।।
ज्ञान गुलाल लगावो सखी री, सतगुरु संग चलो री।
कहैं कबीरसुनो भाई साधू, एकहि फूल फुलो री।।

उपर्युक्त ज्ञानवर्धक पहेली के सटीक व सही उत्तर भेजने वालों के नाम—**श्री भारत सोनवानी,** मु.पो.-भुआ बिछिया, जिला-मण्डला (म.प्र.) भोजराय दास भिलाई, महंत श्री प्रेमदास मानिकपुरी कोण्डागाँव, श्री केदारदास मानिकपुरी बोरपदर, बस्तर (छ.ग.), महंत चिमनदास, गांधीनगर (गुजरात)

ज्ञानवर्धक पहेली

(वर्ष 19, अंक 4)

प्रश्न 1. गुरु चतुर्भुज साहब की वंश परम्परा में कितने गुरु हुये ?

प्रश्न 2. धनी धर्मदास साहब के समकालीन संतों के नाम बताइए, जिन्होंने सद्गुरु कबीर साहब का शिष्यत्व ग्रहण किया था ?

प्रश्न 3. सेवादास जी किस गद्दी के महंत थे और उनके द्वारा किस स्थान पर नवीन उपगद्दी की स्थापना हुई।

प्रश्न 4. वंशगुरु से पंजा प्राप्त न करने वाले साधू-संतों से चौका-आरती कराना निषेध क्यों मानते ?

प्रश्न 5. भजन पूरा करो—

पुरुष मुक्तामणि लोक से आइया, ... ।
..... जिन चरण चीन्हा।।

पंथ प्रकाश

प्रस्तुति-**महंत परवतदास**, उज्जैन (म.प्र.)

संत समागम समारोह, माघ मेला 2014

कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा का विश्व प्रसिद्ध कबीरपंथी मेला इस वर्ष बसंत पंचमी के पावन अवसर पर परम पूज्य नवोदित वंशाचार्य पंथ श्री उदितमुनि नाम साहेब के प्राकट्य पर्व की खुशियों के साथ प्रारंभ हुआ। बसंत पंचमी दिन 4-2-14 को प्रात: उपस्थित हुए सभी संतों ने नवोदित वंशाचार्य को छठे प्राकट्य दिवस के उपलक्ष्य में चरण वंदना कर बधाई दी। सायं संध्या आरती के बाद परमपूज्य पंथ श्री हुजूर प्रकाशमुनि नाम साहेब, गुरुगोस्वामी डॉ. भानुप्रताप साहेब व संत मंडली ने समाधि मंदिर का दर्शन कर पूजन वंदन किया और गुलाल चढ़ाया। पश्चात पंथ श्री हुजूर साहेब ने सभी भक्तों को भेंट पायलागी देकर पान परवाना दिया। भक्तों ने भी चरण वंदना कर गुलाल चढ़ाया।

दिनांक 9.2.14 को सायं पंथ श्री के सभा स्थल पर आगमन के साथ माघ मेला प्रारंभ हो गया। महंत भागवतदास जी द्वारा सत्यनाम धुन प्रस्तुत की गई। अपने आशीर्वचनों में पंथ श्री ने कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा गद्दी की स्थापना के इतिहास को याद कराया। दामाखेड़ा में इस मेले के 109वें आयोजन की सफलता की कामना के साथ आगे भी हम सब निरंतर इस आयोजन का आनन्द लेते रहेंगे, ऐसा विश्वास पंथ श्री हुजूर ने व्यक्त किया। आपने आगंतुक सभी भक्तों से मेले के दौरान कुछ सावधानियाँ बरतने की हिदायत भी दी। पश्चात मारीशस से पधारे महंत दिनेशदास जी द्वारा सत्यनाम धुन प्रस्तुत की गई। पश्चात महंत भागवत दास जी के द्वारा सदगुरु की स्तुति में भक्ति पदों की सुन्दर प्रस्तुति दी गई। पश्चात महंत रामप्रसाद दास के भी भजन हुए। आरती के साथ प्रथम दिन की इस सभा को विराम दिया गया।

दिनांक 10-2-14 को द्वितीय दिन की शुरुआत योग सत्र के साथ हुई। प्रात: 6.30 बजे से ही कर्नल ए.एन. सिंह के कुशल नेतृत्व में भक्तों ने भारी संख्या में योग अभ्यास किया। पश्चात गुरु महिमा पाठ सम्पन्न हुआ। भजनों के क्रम में संत बासादास, संत लक्ष्मीनारायण दास, संत मनोहर दास केवलधाम धमधा के द्वारा प्रभातियों की प्रस्तुति दी गई। संत चुकामाता के द्वारा बधावा व होरी के पदों का गायन हुआ। महंत भागवतदास जी राजू जी, महंत रामप्रसाद दास जी, महंत मंगलदास जी, महंत चाँद दास जी आदि के द्वारा भजनों का क्रम जारी रहा। मध्यान्ह कालीन सभा में महंत परवत दास जी के द्वारा सदगुरु के वाणी वचनों के माध्यम से मानव जीवन को सफल बनाने पर और आध्यात्म पर प्रकाश डाला गया। समय पर संध्या पाठ सम्पन्न हुआ, फिर भजनों का क्रम चलता रहा।

पंथ श्री के आगमन के साथ रात्रि कालीन सभा प्रारंभ हुई। महंत भागवत दास जी के द्वारा सत्यनाम धुन के बाद महंत गुरुदयाल दास ने कबीर पंथ के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह वंशगद्दी हमारी भारतीय गुरु परम्परा को सही अर्थों में निर्वहन करने वाली गद्दी है। सदगुरु कबीर साहेब ने गुरु पद का भार धनी धर्मदास जी साहेब को सौंपा, जिसका निर्वहन निरंतर वंशगुरु करते चले आ रहे हैं। लेकिन आज दुनिया में गुरुपद की अंधी दौड़ लगी हुई है और इन स्वार्थी तत्वों ने हमेशा वंशगुरुओं का विरोध किया है और आप गुरु बन बैठें हैं। इसी कड़ी में गरीबदास संप्रदाय का एक भक्त अपने ही गुरु का द्रोह करके नई गद्दी चलाकर स्वयं को कबीर का अवतार घोषित कर रहा है। भोले-भाले भक्तों को असंगत बातों में अटका कर भटकाने वाले ऐसे कालपालों को समाज में ऊजागर करने की आवश्यकता है। जो स्वयं एक दोष सिद्ध अपराधी, सजा याफ्ता जेल काटा हुआ

D. K. Sahu

शख्स है, अपने प्रचार में पुस्तकें छपवा कर मुफ्त में बाँट रहा है, जो अपनी सुरक्षा के लिये ब्लैक कमांडों रखता हो, जो अपने आश्रम में आने वालों को भौतिक सुविधाएँ मुहैया कराकर अपने जाल में फाँसता हो, जो स्वयं तो गुरु द्रोही हो और स्वयं कबीर पंथ न होकर भी कबीर पंथ पर अपना दावा पेश कर वंशगद्दी की निन्दा कर स्वयं को कबीर सिद्ध कर रहा हो ऐसे साक्षात कालपालों से दूर रहने में ही अपनी भलाई है।

पंथ श्री हुजूर साहेब ने अपनी बात रखते हुए स्पष्ट किया कि प्रश्न यह नही है कि वंशघर का विरोध क्यों हो रहा है। प्रश्न यह है कि विरोधी के बावजूद भी इस घर का बिगड़ा क्या है ? दर असल हमारे विरोधी ही हमारे सबसे बड़े प्रचारक होते हैं। यह जो तथाकथित कबीर अवतार है, उसका शास्त्रार्थ करना या धार्मिक होना महज एक नौटंकी है। एक मूर्ख और एक पागल की बातों का कोई जवाब नहीं होता। सत्यपुरुष की आरती के साथ सभा का समापन हुआ।

संत समागम समारोह का तृतीय दिन, प्रात: योग सत्र व गुरु महिमा का पाठ संपन्न हुआ। आज भक्तों ने मिलकर दामाखेड़ा बस स्टैण्ड पर थोड़ी देर धरना दिया और सदगुरु कबीर साहेब की ऐतिहासिक माला के चोरी हो जाने की सी बी आई जाँच कराने की माँगा शासन तक पहुँचाई। मध्यान्ह कालीन सभा में बाँधवगढ़ के महंत हरीशदास ने धनी धर्मदास जी साहेब का उदाहरण देते हुए भक्ति पर विस्तार से प्रकाश डोलते हुए कहा कि सदगुरु के प्रति समर्पण ही भक्ति है। संध्या पाठ के बाद रात्रि कालीन सभा में पंथ श्री हुजूर साहेब ने सबको भेंट पायलागी का अवसर प्रदान किया। इस दौरान भजनों का क्रम जारी रहा। आरती के साथ कार्यक्रम को विराम दिया गया।

दिनांक 12-2-14 को नियमित रूप से योग सत्र व गुरु महिमा पाठ सम्पन्न हुआ। पश्चात संत मंडली के द्वारा प्रभाती व अन्य भजन प्रस्तुत किए गये। पश्चात महंत त्रिलोकीदास द्वारा सदगुरु कबीर साहेब के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला गया। मध्यान्ह कालीन सभा में संत बासादास, संत लक्ष्मीनारायण दास व संत मनोहर दास द्वारा भजन प्रस्तुत किए गये फिर संध्या पाठ हुआ। रात्रि कालीन सभा में महंत भागवत दास के द्वारा सत्यनाम धुन हुई। पश्चात पंथश्री ने आशीर्वाद बरसाए।अब हम अविगत से चलि आए आपने बताया कि आमतौर पर जगत को उपदेश देने वाले सतगुरु इस भजन में स्वयं अपना परिचय दे रहे हैं। आपने बताया कि सदगुरु का जन्म नहीं होता है, सदगुरु प्रकट होते हैं। सदगुरु चार दागों से न्यारे होते। सार शब्द के गूढ़ रहस्य को समझाते हुए आपने बताया कि सदगुरु का हर वचन सार शब्द होता है और हमें इन वचनों से बाहर नहीं जाना है या सदगुरु के वचन हमारे जीवन से बाहर नहीं जाना चाहिए और यदि इन वचनों को सुनकर भी हम नहीं समझ पाते हैं तो वह सार शब्द हमारे लिये गुप्त ही है। गुरुशरण में रहने से ही सार शब्द प्रकट होता है। आरती के साथ सभा विसर्जित हुई।

13-2-14 को नियमित योग सत्र व गुरु महिमा के बाद भजनों का क्रम चला, जिसमें सतानन्द शास्त्री, धनिका राई, चुका माता के भजन हुए। आज आमिन माता महिला मंडल की विशेष सभा हुई जिसका सम्पूर्ण कार्य भार माताओं ने सम्हाला। बाल मंडली की तरफ से किरण दीदी ने कबीर साहेब के ढाई अक्षर प्रेम को उजागर किया। इस विशेष सभा का समापन नवोदित वंशाचार्य पंथ श्री उदित मुनि नाम साहेब की आरती उतारकर किया गया। अपरान्ह 3.20 बजे पंथ श्री हुजूर साहेब का सभा स्थल पर आगमन हुआ। सत्यनाम धुन संत लक्ष्मीनारायण दास द्वारा प्रस्तुत की गई। अपने पूरे मंत्रिमंडल सहित छत्तीसगढ़ राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह का सभास्थल पर आगमन हुआ। स्वागत वंदन अभिनंदन के उपरांत अतिथियों ने अपनी अपनी बात रखी। पंथ श्री ने भी सबका स्वागत करते हुए कहा कि ये आपकी का संत समागम समारोह है, इसमें प्रतिवर्ष आपको निमंत्रण देने की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए। मुख्यमंत्री महोदय ने भी पंथ श्री के आशीर्वाद लेकर कहा यह दामाखेड़ा छत्तीसगढ़ की काशी है और हमारा छ.ग. सदगुरु कबीर साहेब का प्रान्त है। अतिथियों के प्रस्थान के बाद

पंथ श्री ने सबका ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट किया कि कबीर पंथ की स्थापना के इस वर्ष 500 वर्ष पूरे हो रहे हैं। आपने बताया कि सब जान भी रहे हैं और जिक्र भी कर रहे हैं कि **संवत पन्द्रह सौ सत्तर सारा, चूरामणि गद्दी बैठारा।** वि.सं. 1570 में चूरामणि नाम साहेब को चैत्र चौदस पूर्णिमा की शुभ तिथि पर बांधवगढ़ में कबीरपंथ की गुरुगद्दी पर बैठाकर स्वयं सदगुरु कबीर साहब एवं आमिन माता साहिबा ने सब संतों, राज परिवार एवं जनता जनार्दन के सामने तिलक कर चादर औढ़ाई थी। यह सब जानते हैं और यह वि.सं. 2070 चल रहा है। फिर भी इस तथ्यपर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है कि कबीरपंथ की इस महान परम्पार को 500 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अपना सौभाग्य व्यक्त करते हुए आपने बताया कि यह अवसर हमारे कार्यकाल में आया है। हम इस खुशी को वर्ष भर मनाएँगे। आपने बताया कि सदगुरु तो कबीर साहेब ही है, हम तो उनके आदेश का मात्र पालन कर रहे हैं। अगर हम सतगुरु के चरणों की धूल भी बन पाएँ तो भी जीवन सफल हो जाएगा।

साहेब के प्रस्थान के बाद संध्या पाठ हुआ फिर भागवतदास जी के भजनों का आनंद हुआ। महंत गुरु दयालदास ने धनी धर्मदास जी साहेब के आगमन से लेकर वर्तमान तक की वंश परम्परा का विस्तार से वर्णन किया। **गुरु दरियाव नहाना हो जासे दुरमती भागे।** रात्रि 8 बजे पंथ श्री हुजूर साहेब का पुनः सभा स्थल पर आगमन हुआ। साहेब के साथ छोटे साहेब गुरु गोस्वामी डॉ. भानुप्रताप साहेब एवं डॉ. जी.बी. गुप्ता भी पधारे जिन्होंने पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब की खूब सेवा की है साथ ही दामाखेड़ा अस्पताल बनाने की प्रेरणा भी की है। डॉ. साहेब के आगमन की खुशी में पंथ श्री ने उनका शाल श्रीफल से सत्कार किया। डॉ. जी.बी. गुप्ता ने भी दामाखेड़ा के विशेष प्रभाव को उजागर करतेहुएबताया कि यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे यहाँ की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है और आज भी हो रहा है। गुरु जी ने जो सम्मान मुझे दिया है, उसके लिये मेरे पास कोई शब्द नहीं है।

महंत भागवत दास जी के द्वारा सत्यनाम धुन प्रस्तुत की गई। पंथ श्री हुजूर साहेब ने सबको बताया कि यह हमारे लिये परम सौभाग्य की बात है कि कबीर पंथ की स्थापना के 500 वर्ष हमारे समय में पूरे हो रहे हैं। इस परम्परा की स्थापना स्वयं सदगुरु कबीर साहेब ने अपने हाथों से की है। सदगुरु का धनी धर्मदास जी साहेब से मिलना यह एक ऐसा त्रिवेणी संगम है जहाँ ज्ञान की धारा के रूप में मुक्तामणि नाम साहेब भी मिल जाते हैं। धनी को सदगुरु ने भेजा है लोक से और धनी के माध्यम से जीवों को उबारने के लिये स्वयं सदगुरु को सत्यपुरुष ने भेजा है। लोक से और धनी के माध्यम से जीवों को उबारने के लिये स्वयं सद्गुरु को सत्यपुरुष ने भेजा है। इसका उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है।जब मृत्युलोक में धनी लोक वेद की धारा में बहने लगे थे तब सदगुरु ने जाकर उन्हें जगाया था। सदगुरु की पहली ही चोट इतनी तगड़ी थी कि उनका जीवन रूपांतरित हो गया। बदले हुए धर्मदास जी को देख कर आमिन माता ने पहचान लिया कि वह कोई साधारण संत नहीं हो सकता। उनके कहने से धनी सदगुरु को अपने घर लाते हैं। धर्मनी आमिन आरती उतार कर सदगुरु का स्वागत करते हैं। वर्षों तक सत्संग होता है, चूरामणि नाम साहेब का प्राकट्य होता है, उन्हें गुरु दीक्षा देकर सतगुरु धनी को इशारा करते हैं कि अब आपका समय पूरा हो गया है। सभी अमरकंटक होते हुए उड़ीसा जगन्नाथपुरी पहुँचते हैं, जहाँ फाल्गुन पूर्णिमा को धनी ने अंतिम समाधि ली है। आपने बताया कि धनी के गृह प्रकट हुए चूरामणि नाम साहेब ही नाद वंश भी है और बिन्द वंश भी है। नाद और बिन्द ये अलग अलग नहीं होते, बिन्दु के विस्तार को ही नाद कहते हैं। जैसे दीपक की लौ बिन्दु है तो उसके प्रकाश नाद है। बिना बिन्दु के नाद नहीं रह सकता। आपने बताया कि व्यालिस वंश अटल है। अंत में आपने इस माघ मेला में माताओं को भी कड़िहारी की जिम्मेदारी सौंपने की अपनी भावना व्यक्त की जिसका सभी संतो भक्तों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। रात्रि 1 बजे समिति के सदस्यों द्वारा सत्यपुरुष की आरती उतारी गई और विराम लिया गया।

दिनांक 14-2-14 को पूर्णिमा का दिन था, पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब की पुण्य तिथि थी। प्रात: योग सत्र व गुरु महिमा का पाठ सम्पन्न हुआ पश्चात पूनो महात्म्य का पाठ हुआ। दिन में भजनों का क्रम जारी रहा जिसमें श्री सतानन्द शास्त्री, कु. रानु गंधर्व, महंत बाबूदास, महंत चांददास जी जितेन्द्र दास, कु. प्रिया, प्रीतमदास, उमेशदास व महंत भागवत दास जी ने सेवाएँ दी। सायं 4.40 बजे पंथ श्री का आगमन हुआ। छोटे साहेब ने चरणामृत लेकर आरती उतारी। पश्चात सभी भक्तों को भेंट पायलागी का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में आनंदी चौका आरती का आयोजन हुआ जिसमें हजारों भक्तों ने अपनी आरती प्रकाशित करवाई।

दिनांक 15-2-14 को रात्रि में हजारों भक्तों ने पंथ श्री से दीक्षा ग्रहण कर सत्य मार्ग पर चलना स्वीकार किया। इस अवसर पर पंथ श्री ने अत्यंत स्पष्टता पूर्वक समझाया कि आप कंठी लेकर सदगुरु कबीर साहेब की शरण में जा रहे हैं, अपने जीवन के कल्याण के लिये सदा गुरुशरण में रहना और निरंतर नाम का स्मरण करना। दिनांक 16-2-14 को सामूहिक चलावा चौका आरती का आयोजन हुआ। महंती पंजा वितरण के समय इस बार जो विशेष बात हुई वह ये कि दामाखेड़ा के इतिहास में पहली बार माताओं को महंती पंजा प्रदान किया गया। राजस्थान की चुका माता व गुलाब माता को यह अधिकार प्राप्त हुआ।

मेला क्षेत्र में जगह जगह प्रचार केन्द्र स्थापति थे, स्वयं सेवकों द्वारा जलपान केन्दों को संचालित किया जा रहा था। अनेक विशेषज्ञ चिकित्सकों ने पंथश्री गृन्धमुनि नाम साहेब स्मृति चिकित्सालय के माध्यम से अपनी सेवाएँ प्रदान की, आमिन माता महिला मंडल व नव युवक मंडल की सेवाएँ अटूट रहीं। पुलिस प्रशासन भी सजग था तथा ग्राम पंचायत दामाखेड़ा की सेवाएँ भी प्रशंसनीय रहीं।

कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा का यह 109 वाँ सदगुरु कबीर संत समागम समारोह माघ मेला, वर्ष 2014 बहुत ही उमंग व खुशी के साथ मनाया गया। भक्तों को साहेब के दर्शनों का व प्रवचनों का लाभ प्रतिदिन मिला, भेंट पायलागी का लाभ भी मिलता रहा, सबने खूब समाधि दर्शन भी किए संतों के दरश परस का आनंद हुआ, अनेक दशों के हंस यहाँ आकर मिले। गुरु गोस्वामी भानुप्रताप साहेब के कुशल मार्ग निर्देशन में सतगुरु कबीर धर्मदास साहेब वंशावली प्रतिनिधि सभा के अथक प्रयासों से यह मेला सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

संत समागम समारोह एवं महायज्ञ एकोत्तरी आरती, चौरेंगा

कबीर धर्मनगर दामाखेड़ा से महज 2 किमी दूर स्थित ग्राम चौरंगा में विगत जनवरी 2014 की 13, 14 व 15 तारीख को पौष पूर्णिमा के शुभ पर्व पर वृहद संत समागम समारोह का सुन्दर आयोजन हुआ। चौरेंगा के समस्त ग्रामवासियों के अथक प्रयासों से यह समारोह अकल्पनीय सौंदर्य के साथ निखर कर सामने आया। कई वर्षों से इस कार्यक्रम के लिये माँग कर रहे चौरेंगा ग्राम के भक्तों की पुकार सुन कर पंथ श्री ने इसकी इजाजत दी थी।

दिनांक 13-1-14 को प्रात: कार्यक्रम की तैयारियों के बीच संतों के द्वारा गुरु महिमा का पाठ सम्पन्न हुआ। सायं संध्या पाठ सम्पन्न हुआ। परम पूज्य पंथ श्री हुजूर प्रकाशमुनि नाम साहेब के आगमन के साथ झंडा वंदन और दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत उदघाटन किया गया। साहेब के सिंहासनासीन होते ही कार्यक्रम प्रारंभ हो गये। सर्वप्रथम कार्यक्रम के आयोजक मंडल ग्राम चौरेंगा के गणमान्य नागरिकों द्वारा पंथ श्री के चरणों में फूलमाला अर्पण कर स्वागत किया गया। कबीरधाम अमलेश्वर के महंत भागवत दास जी व साथियों द्वारा सत्यनाम धुन प्रस्तुत की गई।

अपने आशीर्वचनों में पंथ श्री ने अपने बचपन को याद करते हुए बताया कि यह वही मैदान है जहाँ कभी मैं क्रिकेट खेलने आया करता था। आपने कहा कि अगर धर्मनगर दामाखेड़ा कबीर साहेब है तो यह चौरेंगा धर्मदास साहेब है। दामाखेड़ा के प्रति चौरेंगा की सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकता। वचन वंश चूरामणि नाम साहब के

D. K. Sahu

अवतार पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब का भी इस ग्राम से अटूट लगाव रहा है। पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब के आदर्शों को याद करते हुए आपने कहा कि जीवन में रहनी-गहनी प्रधान है। हम कहीं भी हों, हमारा अंत:करण पवित्र होना चाहिए। सब के प्रति प्रेम और इष्ट के प्रति अनुराग से चित्त निर्मल होगा। अंत में आपने बताया कि गुरु आज्ञा में रहने से हम तीनों लोकों में निर्भय रह सकेंगे।

दिनांक 14-1-14 मकर संक्रांति के शुभ पर्व पर कार्यक्रम के द्वितीय दिन प्रात: गुरु महिमा का पाठ संपन्न हुआ। पश्चात शोभायात्रा की तैयारियाँ पूर्ण हुई। सम्पूर्ण ग्राम की परिक्रमा कर भव्य शोभायात्रा कार्यक्रम स्थल पर सभा के रूप में परणित हो गई। पंथ श्री हुजूर साहेब के आगमन के तुरन्त बाद ही छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह जी का भी मंच पर आगमन हुआ। स्वागत के उपरांत भाटापारा के विधायक श्री शिवरतन शर्मा ने इस ग्राम चौरेंगा की समस्याओं का जिक्र किया। पंथ श्री ने विधायक महोदय के विचारों का समर्थन किया। साथ ही बनारस (उ.प्र.) के कबीर चौरा मठ से सदगुरु कबीर साहेब की ऐतिहासिक माला के चोरी हो जाने की घटना की सी.बी.आई. जाँच हो इसके लिये उ.प्र. सरकार पर दबाव बनाने हेतु ज्ञापन सौंपा। मुख्यमंत्री महोदय ने सदगुरु कबीर साहब के सिद्धांतों में विश्वास व्यक्त करते हुए अपने सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। आयोजन समिति की ओर से श्री छम्मनलाल वर्मा द्वारा अतिथियों का शॉल-श्रीफल भेंट कर सत्कार किया गया। महंत श्री भागवत दास जी के द्वारा सुन्दर भजनों की प्रस्तुति दी गई।

संध्या पाठ सम्पन्न हुआ। पंथ श्री हुजूर साहेब के मंच पर आगमन के साथ ही रात्रि कालीन सभा प्रारंभ हो गई। महंत भागवत दास जी के द्वारा सत्यनाम धुन प्रस्तुत की गई। तुरन्त बाद पंथ श्री हुजूर साहेब ने अपने आशीर्वचनों से भक्तों को सराबोर कर दिया। आपने अपने उदबोधन में कहा कि सदगुरु कबीर का संदेश मानव मात्र के लिये है। सदगुरु के संबोधन में एक अपनापन है और साहेब हमें साधक बनाना चाहते हैं। साधु का स्वभाव सूप जैसा होता है, जो सार-सार को रख कर कचरे को उड़ा देता है। साधक यह काम तभी कर सकता है जब उसकी आँखे खुली हो, अर्थात विवेक जगा हो। सदगुरु ने भक्ति का पंथ चलाया, एक भक्त ही सदगुरु के वचनों को सत्य मानता है। धनी धर्मदास जी साहेब कबीरपंथ के आदर्श पुरुष हैं। हम सबको भी धर्मदास बनना पड़ेगा और वही भाव लाना होगा। साहेब के आगमन पर धनी धर्मदास अपना सब कुछ भूल गये, सदगुरु को सब कुछ अपनी भक्ति, श्रृद्धा, विश्वास और स्वयं अपने आप को समर्पित कर दिया। तब सदगुरु ने उनके गृह में नौतम सुरति वचनवंश चूरामणि नाम साहेब को भेजा और संसार के भटके हुए जीवों को सही राह दिखाने के लिये ब्यालिस वंश का आशीर्वाद दिया और यह भी कहा कि जब कभी वंश में चूक पड़ेगी तब ये ही चूरामणि नाम साहेब पुन: आकर पंथ को सम्हालेंगे। पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहेब भी चूरामणि नाम साहेब का ही अवतार हुए हैं। अंत में आपने बताया कि कबीर पंथ में जीव को हंस कहा जाता है। मानसरोवर के हंस ताल तलैया नहीं डोलते, वैसे ही साहेब के हंस संसार में नहीं भटकते। इसलिये उपदेश दिया कि **अमरपुरी से आया बंदे, फेर अमरपुर जाना है। कहत कबीर सुनो भाई साधो, ऐसी लगन लगाना है।** पंथ श्री हुजूर साहेब के अमृत वचनों के बाद महंत भागवत दास जी एवं महंत तुलसीदास जी के भजन हुए। आरती के साथ रात्रिकालीन सभा संपन्न हुई।

कार्यक्रमों के अंतिम दिन दिनांक 15-1-14 को प्रात: गुरु महिमा पाठ व पूनो महात्म्य पाठ सम्पन्न हुआ। दिन में 12 बजे से 4 बजे तक महायज्ञ एकोत्तरी चौका आरती का कार्यक्रम जारी रहा। प्रसाद वितरण और भंडारा के साथ सम्पूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभी चौरेंगा ग्रामवासियों ने तन-मन-धन लगाकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

●●

D. K. Sahu